दस-दिवसीय विपश्यना शिविरों की प्रातःकालीन वन्दनाएं

दिवस १

जागो लोगो जगत के, बीती काली रात।
हुआ उजाला धरम का, मंगल हुआ प्रभात॥

आओ प्राणी विश्व के, सुनो धरम का ज्ञान।
इसमें सुख है शांति है, मुक्ति मोक्ष निरवाण॥

यह तो वाणी बुद्ध की, शुद्ध धरम की ज्योत।
अक्षर अक्षर में भरा, मंगल ओत परोत।

बुध वाणी मीठी घणी, मिसरी के से बोल।
कल्याणी मंगलमयी, भरा अमृत रस घोल॥

समन्ता चक्कवाळेसु, अत्रागच्छन्तु देवता।
अत्रागच्छन्तु देवता, अत्रागच्छन्तु देवता।
सद्धम्मं मुनिराजस्स, सुणन्तु सग्गमोक्खदं॥

समस्त चक्रवालोंके निवासी देवगण! यहां आएं! देवगण यहां आएं!! देवगण यहां आएं!!! और मुनिराज भगवान बुद्ध के स्वर्ग तथा मोक्षप्रदायक सद्धर्म को श्रवण करें।

धम्म-सवणकालो, अयं, भदन्ता।
धम्म-सवणकालो, अयं, भदन्ता।
धम्म-सवणकालो, अयं, भदन्ता॥

धर्म श्रवण करने का यही (उपयुक्त) समय है, पूज्यवर! धर्म श्रवण करने का यही (उपयुक्त) समय है, पूज्यवर!! धर्म श्रवण करने का यही (उपयुक्त) समय है, पूज्यवर!!!

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स।
नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स।
नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स।

नमस्कार है उन भगवान अरहत सम्यक-संबुद्ध को! नमस्कार है उन भगवान अरहत सम्यक-संबुद्ध को!! नमस्कार है उन भगवान अरहत सम्यक-संबुद्ध को!!!

बुद्धं सरणं गच्छामि।
धम्मं सरणं गच्छामि।
सङ्घं सरणं गच्छामि।

मैं बुद्ध की शरण जाता हूं। मैं धर्म की शरण जाता हूं। मैं संघ की शरण जाता हूं।

इमाय धम्मानुधम्मपटिपत्तिया बुद्धं पूजेमि, धम्मं पूजेमि, सङ्घं पूजेमि।

सद्धर्म के इस मार्ग पर आरूढ़ होकर मैं बुद्ध की पूजा करता हूं, धर्म की पूजा करता हूं, संघ की पूजा करता हूं।

ये च बुद्धा अतीता च,
ये च बुद्धा अनागता।
पच्चुप्पन्ना च ये बुद्धा,
अहं वन्दामि सब्बदा॥

अतीत कालमें जितने भी बुद्ध हुए हैं, अनागत कालमें जितने भी बुद्ध होंगे, वर्तमान कालमें जितने भी बुद्ध हैं, उन सबों की मैं सदैव वंदना करता हूं।

ये च धम्मा अतीता च,
ये च धम्मा अनागता।
पच्चुप्पन्ना च ये धम्मा,
अहं वन्दामि सब्बदा॥

अतीत कालके जो भी धर्म हैं, अनागत कालमें जो भी धर्म होंगे, वर्तमान कालके जो भी धर्म हैं, उन सबों की मैं सदैव वंदना करता हूं।

ये च सङ्घा अतीता च,
ये च सङ्घा अनागता।
पच्चुप्पन्ना च ये सङ्घा,
अहं वन्दामि सब्बदा॥

अतीत कालमें जो भी आर्य-संघ हुए हैं, अनागत कालमें जो भी आर्य-संघ होंगे, वर्तमान कालमें जो भी आर्य-संघ हैं, उन सबों की मैं सदैव वंदना करता हूं।

नत्थि मे सरणं अञ्ञं,
बुद्धो मे सरणं वरं।
एतेन सच्चवज्जेन,
जयस्सु जयमङ्गलं॥

मेरी अन्य कोई शरण नहीं, केवल बुद्ध ही मेरी उत्तम शरण हैं, इस सत्य वचन (के प्रताप) से जय हो! मंगल हो!!

नत्थि मे सरणं अञ्ञं,
धम्मो मे सरणं वरं।
एतेन सच्चवज्जेन,
भवतु ते जयमङ्गलं॥

मेरी अन्य कोई शरण नहीं, केवल (लोकोत्तर) धर्म ही मेरी उत्तम शरण है, इस सत्य वचन (के प्रताप) से तेरा जय-मंगल हो!!

नत्थि मे सरणं अञ्ञं,
सङ्घो मे सरणं वरं।
एतेन सच्चवज्जेन, भवतु सब्ब मङ्गलं॥

मेरी अन्य कोई शरण नहीं, केवल आर्य-संघ ही मेरी उत्तम शरण है, इस सत्य वचन (के प्रताप) से सबका मंगल हो!!

इतिपि सो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरणसम्पन्नो सुगतो लोक विदू अनुत्तरो पुरिस-दम्म-सारथी सत्था देवमनुस्सानं बुद्धो भगवा'ति।

ऐसे ही तो हैं वे भगवान! अरहंत, सम्यक-संबुद्ध, विद्या तथा सदाचरण से संपन्न, उत्तम गति-प्राप्त, समस्त लोकों के ज्ञाता, सर्वश्रेष्ठ, (पथ-भ्रष्ट घोड़ों की तरह) भटके लोगों को सही मार्ग पर ले आने वाले सारथी, देवताओं और मनुष्यों के शास्ता (आचार्य), बुद्ध, भगवान।

स्वाक्खातो भगवता धम्मो सन्दिट्ठिको अकालिको एहिपस्सिको ओपनेय्यिको पच्चत्तं वेदितब्बो विञ्ञूहि।

भगवान द्वारा भली प्रकार आख्यात किया गया यह धर्म संदृष्टिक है (कालपनिक नहीं), प्रत्यक्ष है, तत्काल फलदायक है, आओ और देखो (कहलाने योग्य है), निर्वाण तक ले जाने योग्य है, प्रत्येक समझदार व्यक्ति के साक्षात करने योग्य है।

सुप्पटिपन्नो भगवतो सावक सङ्घो, उजुप्पटिपन्नो भगवतो सावक सङ्घो, ञायप्पटिपन्नो भगवतो सावक सङ्घो, सामीचिप्पटिपन्नो भगवतो सावक सङ्घो, यदिदं चत्तारि पुरिसयुगानि अट्ठपुरिसपुग्गला एस भगवतो सावक सङ्घो, आहुनेय्यो पाहुनेय्यो दक्खिणेय्यो अञ्जलिक रणीयो अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोक स्सा'ति।

सुमार्ग पर चलने वाला है भगवान का श्रावक संघ, ऋजुमार्ग पर चलने वाला है भगवान का श्रावक संघ, न्याय (सत्य) मार्ग पर चलने वाला है भगवान का श्रावक संघ, उचित मार्ग पर चलने वाला है भगवान का श्रावक संघ। यह जो (मार्ग-फल-प्राप्त आर्य) व्यक्तियों के चार जोड़े हैं, याने आठ पुरुष-पुद्गल हैं – यही भगवान का श्रावक संघ है, (यही) आवाहन करने योग्य है, पाहुना बनाने (आतिथ्य) योग्य है, दक्षिणा देने योग्य है, अंजलिबद्ध (प्रणाम) किये जाने योग्य है। लोगों का यही श्रेष्ठतम पुण्य क्षेत्र है।

☆☆☆

अप्पसन्नेहि नाथस्स, सासने साधुसम्मते।
अमनुस्सेहि चण्डेहि, सदा किब्बिसकारिभि॥

भगवान के साधु-सम्मत धर्म के प्रति अप्रसन्न रहने वाले, सद्भावना न रखने वाले, चंड स्वभाव वाले अमनुष्य (यक्ष, देव आदि) सर्वदा दुष्ट कर्मों में ही लीन रहते हैं।

परिसानं चतस्सन्नं, अहिंसाय च गुत्तिया।
यं देसेसि महावीरो, परित्तं तं भणामहे,
यं देसेसि महावीरो, परित्तं तं भणामहे॥

चतुर्वर्गीय परिषद (भिक्षु, भिक्षुणी, उपासक, उपासिका) को ऐसे दुष्ट कष्ट न दें और उनकी रक्षा हो सके, इस निमित्त महावीर भगवान बुद्ध ने इस (आटानाटिय-सुत्त) परित्राण की देशना की थी, उसे हम कह रहे हैं -

विपस्सिस्स च नमत्थु, चक्खुमन्तस्स सिरीमतो।
सिखिस्सपि च नमत्थु, सब्बभूतानुकम्पिनो॥

अंतःचक्षु-प्राप्त श्रीमान (भगवान) विपस्सी बुद्ध को नमस्कार है! सब प्राणियों पर अनुकंपा करनेवाले (भगवान) सिखी बुद्ध को नमस्कार है!!

वेस्सभुस्स च नमत्थु, न्हातकस्स तपस्सिनो।
नमत्थु ककुसन्धस्स, मारसेनप्पमद्दिनो॥

समस्त क्लेशों को धो देने वाले तपस्वी (भगवान) वेस्सभु बुद्ध को नमस्कार है! मार सेना का मर्दन करनेवाले (भगवान) ककुसन्ध बुद्ध को नमस्कार है!!

कोणागमनस्स नमत्थु, ब्राह्मणस्स वुसीमतो।
कस्सपस्स च नमत्थु, विप्पमुत्तस्स सब्बधि॥

पूर्णता-प्राप्त ब्राह्मण (भगवान) कोणागमन को नमस्कार है! सभी क्लेशों से पूर्णतया विमुक्त (भगवान) कस्सप बुद्ध को नमस्कार है!!

अङ्गीरसस्स नमत्थु, सक्यपुत्तस्स सिरीमतो।
यो इमं धम्मं देसेसि, सब्बदुक्खापनूदनं॥

जिनके अंग-अंग से प्रकाश प्रस्फुटित होता है ऐसे अंगीरस श्रीमान शाक्यपुत्र (भगवान गौतम बुद्ध) को नमस्कार है, जिन्होंने सभी दुःखों के विनाश हेतु यह धर्म-देशना दी है।

ये चापि निब्बुता लोके, यथाभूतं विपस्सिसुं।
ते जना अपि सुणाथ, महन्ता वीतसारदा॥

विपश्यना भावना द्वारा धर्म का यथाभूत दर्शन कर जो अरहंत जन इस लोक में ही निर्वाण प्राप्त कर चुके हैं, वे महान और बुद्धिमान जन भी सुनें।

हितं देवमनुस्सानं, यं नमस्सन्ति गोतमं।
विज्जाचरणसम्पन्नं, महन्तं वीतसारदं॥

जो विद्याचरणसंपन्न, महान और प्रज्ञावान, बुद्ध को देव-मनुष्यों के हित के लिए नमस्कार करते हैं, (वे भी सुनें)।

एते चञ्ञे च सम्बुद्धा, अनेकसतकोटियो।
सब्बे बुद्धा समसमा, सब्बे बुद्धा महिद्धिका॥

उपरोक्त सम्यक संबुद्धों के अतिरिक्त जो अनेक शत-कोटि सम्यक संबुद्ध हुए हैं वे अन्य किसी की भी तुलना में अ-सम हैं, महान हैं; परंतु पारस्परिक तुलना में सभी सम हैं, सभी विपुल ऋद्धिशाली हैं।

सब्बे दसबलूपेता, वेसारज्जेहुपागता।
सब्बे ते पटिजानन्ति, आसभट्ठानमुत्तमं॥

सभी बुद्ध दस-बलशाली होते हैं, सभी वैशारद्यप्राप्त भयमुक्त होते हैं, वे सभी परमार्षभ याने परमोत्तम स्थान को प्राप्त स्वीकार करते हैं।

सीहनादं नदन्तेते, परिसासु विसारदा।
ब्रह्मचक्कं पवत्तेन्ति, लोके अप्पटिवत्तियं॥

ये सभी सिंहनाद सदृश देशना द्वारा संपूर्ण परिषद को निर्भय कर देते हैं और ऐसे ब्रह्मचक्र (धर्मचक्र) का प्रवर्तन करते हैं जिसका कि समस्त लोक में कोई भी प्राणी उल्टा प्रवर्तन नहीं कर सकता।

उपेता बुद्धधम्मेहि, अट्ठारसहि नायका।
बत्तिंसलक्खणूपेता, सीतानुब्यञ्जना धरा॥

ये सभी लोकनायक अट्ठारह बुद्ध-गुण-धर्मों से युक्त हैं, महापुरुष के बत्तीस प्रमुख लक्षणों और अस्सी अनुब्यंजनों को धारण करने वाले हैं।

ब्यामप्पभाय सुप्पभा, सब्बे ते मुनिकुञ्जरा।
बुद्धा सब्बञ्ञुनो एते, सब्बे खीणासवा जिना॥

ये सभी मुनिश्रेष्ठ ब्यामप्रभा से प्रभान्वित होते हैं। ये सभी बुद्ध सर्वज्ञ होते हैं और क्षीण-आस्रव (जन) होते हैं।

महापभा महातेजा, महापञ्ञा महब्बला।
महाकारुणिका धीरा, सब्बेसानं सुखावहा॥

ये बुद्ध महाप्रभावान, महातेजस्वी, महाप्रज्ञावान, महाबलशाली, महाकारुणिक ,पंडित और सभी प्राणियों के लिए सुख लाने वाले हैं।

दीपा नाथा पतिट्ठा च, ताणा लेणा च पाणिनं।
गती बन्धू महेस्सासा, सरणा च हितेसिनो॥

ये सभी बुद्ध, डूबते हुये के लिए द्वीप, अनाथों के नाथ, निराधारों के आधार, त्राणरहितों के त्राण, निरालयों के आलय, अगतिवानों की गति, बंधुहीनों के बंधु, निराश लोगों की आशा, अशरणों की शरण और सब के हितैषी हैं।

सदेवकस्स लोकस्स, सब्बे एते परायणा।
तेसाहं सिरसा पादे, वन्दामि पुरिसुत्तमे॥

इस प्रकार देवताओं सहित समस्त लोकों के शरणदायक (आधार) परम पुरुषोत्तम बुद्धों के चरणों में नत-मस्तक होकर मैं वंदना करता हूं!

वचसा मनसा चेव, वन्दामेते तथागते।
सयने आसने ठाने, गमने चापि सब्बदा॥

सोते, बैठते, खड़े और चलते, सभी समय ऐसे तथागत बुद्धों की मैं मन और वचन से वंदना करता हूं!

सदा सुखेन रक्खन्तु, बुद्धा सन्तिकरा तुवं।
तेहि त्वं रक्खितो सन्तो, मुत्तो सब्बभयेहि च॥

ये शांतिदायक तुम्हें सदा सुखी रखें, तुम्हारी सदैव रक्षा करें! (इस प्रकार) उनके द्वारा रक्षित होकर तुम सब प्रकार के भय से मुक्त हो जाओ!!

सब्बरोगा विनीमुत्तो, सब्बसन्तापवज्जितो।
सब्बवेरमतिक्कन्तो, निब्बुतो च तुवं भव॥

सब प्रकार के रोग, संताप और वैरों से विमुक्त होकर तुम परम सुख और शांति प्राप्त करो!!

तेसं सच्चेन सीलेन, खन्ति मेत्ता बलेन च।
तेपि त्वं अनुरक्खन्तु, अरोगेन सुखेन च॥

वे बुद्ध अपने सत्य, शील, क्षांति (क्षमा) और मैत्री के बल से तुम्हारी रक्षा करें! निरोग और सुखी रखें!!

पुरत्थिमस्मिं दिसाभागे, सन्ति भूता महिद्धिका।
तेपि त्वं अनुरक्खन्तु, अरोगेन सुखेन च॥

पूर्व दिशावासी महान ऋद्धिशाली (गंधर्व) प्राणी हैं, वे तुम्हारी रक्षा करें! निरोग और सुखी रखें!!

दक्खिणस्मिं दिसाभागे, सन्ति देवा महिद्धिका।
तेपि त्वं अनुरक्खन्तु, अरोगेन सुखेन च॥

दक्षिण दिशावासी महान ऋद्धिशाली (कुम्भण्ड) देव हैं, वे तुम्हारी रक्षा करें! निरोग और सुखी रखें!!

पच्छिमस्मिं दिसाभागे, सन्ति नागा महिद्धिका।
तेपि त्वं अनुरक्खन्तु, अरोगेन सुखेन च॥

पश्चिम दिशावासी महान ऋद्धिशाली (नाग) देव हैं, वे तुम्हारी रक्षा करें! निरोग और सुखी रखें!!

उत्तरस्मिं दिसाभागे, सन्ति यक्खा महिद्धिका।
तेपि त्वं अनुरक्खन्तु, अरोगेन सुखेन च॥

उत्तर दिशावासी महान ऋद्धिशाली (यक्ष) देव हैं, वे तुम्हारी रक्षा करें! निरोग और सुखी रखें!!

पुरत्थिमेन धतरट्ठो, दक्खिणेन विरूळ्हको।
पच्छिमेन विरूपक्खो, कुवेरो उत्तरं दिसं॥

पूर्व दिशा में धृतराष्ट्र हैं, दक्षिण दिशा में विरूढ़क हैं, पश्चिम दिशा में विरूपाक्ष हैं, उत्तर दिशा में कुबेरहैं।

चत्तारो ते महाराजा, लोकपाला यसस्सिनो।
तेपि त्वं अनुरक्खन्तु, अरोगेन सुखेन च॥

ये चातुर्महाराजिक यशस्वी लोकपाल देवता हैं, वे तुम्हारी रक्षा करें! निरोग और सुखी रखें!!

आकासट्ठा च भूमट्ठा, देवा नागा महिद्धिका।
तेपि त्वं अनुरक्खन्तु, अरोगेन सुखेन च॥

धरती और आकाश पर रहने वाले सभी महान ऋद्धिशाली देव और नाग हैं, वे तुम्हारी रक्षा करें!निरोग और सुखी रखें!!

इद्धिमन्तो च ये देवा, वसन्ता इध सासने।
तेपि त्वं अनुरक्खन्तु, अरोगेन सुखेन च॥

वर्तमान (बुद्ध) शासन में रहने वाले जो सभी ऋद्धिमानदेव हैं वे भी तुम्हारी रक्षा करें!निरोग और सुखी रखें!!

सब्बीतियो विवज्जन्तु, सोको रोगो विनस्सतु।
मा ते भवत्वन्तरायो, सुखी दीघायुको भव,
सुखी दीघायुको भव, सुखी दीघायुको भव॥

तुम्हारे सब उपद्रव दूर हों! शोक और रोग विनष्ट हों! कोई अंतराय (विघ्न) न रहे! तुम सुखी रहो! दीर्घायु होओ!!

अभिवादनसीलस्स, निच्चं वुद्धापचायिनो।
चत्तारो धम्मा वड्ढन्ति, आयु वण्णो सुखं बलं,
आयु वण्णो सुखं बलं॥

जो अभिवादनशील है, सदा वृद्धों की सेवा करने वाला है, उसके चारों धर्म (संपदाएं) - आयु, वर्ण, सुख और बल – बढ़ते हैं।

यानीध भूतानि समागतानि,
भुम्मानि वा यानि'व अन्तलिक्खे।
तथागतं देवमनुस्सपूजितं,
बुद्धं नमस्साम सुवत्थि होतु।

धरती या आकाश में रहने वाले जो भी प्राणी यहां उपस्थित हैं, हम सभी समस्त देवों और मनुष्यों द्वारा पूजित तथागत बुद्ध को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

धम्मं नमस्साम सुवत्थि होतु।

हम धर्म को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

सङ्घं नमस्साम सुवत्थि होतु॥

हम संघ को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

नमन करूं गुरुदेव को, चरणन शीश नवाय।
धरम रतन ऐसा दिया, पाप समीप न आय॥

ऐसा चखाया धरम रस, बिसयन रस न लुभाय।
धरम सार ऐसा दिया, छिलके दिये छुड़ाय॥

रोम रोम किरतग हुआ, ऋण न चुकाया जाय।
जीऊं जीवन धरम का, दुखियन की सेवा करूं,
यही उचित उपाय॥

इस सेवा के पुण्य से, भला सभी का होय।
जो जो आये तप करण, सबका मंगल होय॥

भवतु सब्ब मङ्गलं। भवतु सब्ब मङ्गलं। भवतु सब्ब मङ्गलं॥

सबका मंगल, सबका मंगल, सबका मंगल होय रे।
तेरा मंगल, तेरा मंगल, तेरा मंगल होय रे॥

जो जो आये तप करने को, जो जो आये तप करने को,
सबके दुखड़े दूर हों, सबके दुखड़े दूर हों।

जनम जनम के बंधन टूटें, अंतरतम की गांठें टूटें,
मानस निरमल होय रे॥

सबका मंगल, सबका मंगल, सबका मंगल होय रे।
तेरा मंगल, तेरा मंगल, तेरा मंगल होय रे।
जन जन मंगल, जन जन मंगल,
जन जन सुखिया होय रे॥

दिवस २

जागो लोगो जगत के, बीती काली रात।
हुआ उजाला धरम का, मंगल हुआ प्रभात॥

आओ प्राणी विश्व के, सुनो धरम का ज्ञान।
इसमें सुख है शांति है, मुक्ति मोक्ष निरवाण॥

यह तो वाणी बुद्ध की, शुद्ध धरम की ज्योत।
अक्षर अक्षर में भरा, मंगल ओत परोत॥

बुध वाणी मीठी घणी, मिसरी के से बोल।
कल्याणी मंगलमयी, भरा अमृत रस घोल।

ये सन्ता सन्तचित्ता, तिसरण-सरणा, एत्थ लोकन्तरे वा।
भुम्माभुम्मा च देवा, गुण-गण-गहणा, ब्यावटा सब्बकालं॥

जो शांत-स्वभाव और शांत-चित्त हैं, त्रिशरण शरणागत हैं, इस लोक एवं अन्य लोकों में रहने वाले हैं, भूमि पर एवं आकाश में रहने वाले हैं, जो सर्वदा गुणों को ग्रहण करने में ही रत हैं;

एते आयन्तु देवा, एते आयन्तु देवा, एते आयन्तु देवा,
वर-कनक-मये, मेरुराजे वसन्तो।

सन्तो सन्तोसहेतुं, मुनिवर-वचनं, सोतुमग्गं समग्गा।
सन्तो सन्तोसहेतुं, मुनिवर-वचनं, सोतुमग्गं समग्गा॥

श्रेष्ठ स्वर्णमय सुमेरु पर्वतराज पर रहने वाले ये सभी उपस्थित देवता संतोष के लिए मुनिश्रेष्ठ के श्रेष्ठ वचन को सुनने के लिए एक साथ आयें।

नमो तस्स भगवतो०।
बुद्धं सरणं गच्छामि।
इमाय धम्मानुधम्मपटिपत्तिया०।
ये च बुद्धा अतीता च०।
नत्थि मे सरणं अञ्ञं०।
इतिपि सो भगवा०।

यानीध भूतानि समागतानि, भुम्मानि वा यानि'व अन्तलिक्खे। सब्बेव भूता सुमना भवन्तु, अथोपि सक्कच्चसुणन्तु भासितं॥

इस समय धरती या आकाश में रहने वाले जो भी प्राणी (भूतादि) उपस्थित हैं, वे सौमनस्य-पूर्ण हों (प्रसन्न-चित्त हों) और इस कथन (धर्म-वाणी) को आदर के साथ सुनें।

तस्मा हि भूता निसामेथ सब्बे, मेत्तं करोथमानुसिया पजाय। दिवा च रत्तो च हरन्ति ये बलिं, तस्मा हि ते रक्खथ अप्पमत्ता॥

(हे उपस्थित प्राणी) इस प्रकार (आप) सब ध्यान से सुनें और मनुष्यों के प्रति मैत्री-भाव रखें। जिन मनुष्यों से (आप) दिन-रात बलि (भेंट-पूजा-प्रसाद) ग्रहण करते हैं, प्रमादरहित होकर उनकी रक्षा करें।

यं किञ्चि वित्तं इध वा हुरं वा, सग्गेसु वा यं रतनं पणीतं। न नो समं अत्थि तथागतेन, इदम्पि बुद्धे रतनं पणीतं। एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥

इस लोक में अथवा अन्य लोकों में जो भी धन-संपत्ति है और स्वर्गों में जो भी अमूल्य-रत्न हैं, उनमें से कोई भी तो तथागत (बुद्ध) के समान (श्रेष्ठ) नहीं है। (सचमुच) यह भी बुद्ध में उत्तम गुण-रत्न है –इस सत्य-कथन के प्रभाव से कल्याण हो।

खयं विरागं अमतं पणीतं, यदज्झगा सक्यमुनी समाहितो। न तेन धम्मेन समत्थि किञ्चि, इदम्पि धम्मे रतनं पणीतं। एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥

समाहित-चित्त से शाक्य-मुनि भगवान बुद्ध ने जिस राग-विमुक्त आस्रव-हीन श्रेष्ठ अमृत को प्राप्त किया था, उस लोकोत्तर निर्वाण-धर्म के समान अन्य कुछ भी नहीं है। (सचमुच) यह भी धर्म में उत्तम रत्न है –इस सत्य-कथन के प्रभाव से कल्याण हो।

यं बुद्धसेट्ठो परिवण्णयी सुचिं, समाधिमानन्तरिकञ्ञमाहु। समाधिना तेन समो न विज्जति, इदम्पि धम्मे रतनं पणीतं। एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥

जिस परम विशुद्ध आर्य-मार्गिक समाधि की प्रशंसा स्वयं बुद्ध ने की है और जिसे 'आनन्तरिक,' याने तत्काल फलदायी, कहा है, उसके समान अन्य कोई भी तो समाधि नहीं है। (सचमुच) यह भी धर्म में उत्तम रत्न है – इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो।

ये पुग्गला अट्ठ सतं पसत्था, चत्तारि एतानि युगानि होन्ति। ते दक्खिणेय्या सुगतस्स सावका, एतेसु दिन्नानि महप्फलानि। इदम्पि सङ्घे रतनं पणीतं, एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥

जिन आठ प्रकार के आर्य (पुद्गल) व्यक्तियों की संतों ने प्रशंसा की है, (मार्ग और फल की गणना से) जिनके चार जोड़े होते हैं, वे ही बुद्ध के श्रावक संघ (शिष्य) दक्षिणा के उपयुक्त पात्र हैं। उन्हें दिया गया दान महाफलदायी होता है। (सचमुच) यह भी संघ में उत्तम रत्न है – इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो।

ये सुप्पयुत्ता मनसा दळ्हेन, निक्कामिनो गोतमसासनम्हि। ते पत्तिपत्ता अमतं विगय्ह, लद्धा मुधा निब्बुतिं भुञ्जमाना। इदम्पि सङ्घे रतनं पणीतं, एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥

जो (आर्य पुद्गल) भगवान बुद्ध के (साधना) शासन में दृढ़ता-पूर्वक एकाग्रचित्त और वितृष्ण होकर संलग्न हैं, तथा जिन्होंने सहज ही अमृत में गोता लगा कर अमूल्य निर्वाण-रस का आस्वादन कर लिया है और प्राप्तव्य को प्राप्त कर लिया है (उत्तम अरहंत फल को पा लिया है)। (सचमुच) यह भी संघ में उत्तम रत्न है – इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो।

यथिन्दखीलो पठविं सितो सिया, चतुब्भि वातेहि असम्पकम्पियो। तथूपमं सप्पुरिसं वदामि, यो अरियसच्चानि अवेच्च पस्सति। इदम्पि सङ्घे रतनं पणीतं, एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥

जिस प्रकार पृथ्वी में (दृढ़ता से) गड़ा हुआ इंद्र-कील (नगर-द्वार-स्तंभ) चारों ओर के पवन-वेग से भी प्रकंपित नहीं होता, उस प्रकार के व्यक्ति को ही मैं सत्पुरुष कहता हूं, जिसने (भगवान के साधना-पथ पर चल कर) आर्यसत्यों का सम्यक दर्शन (साक्षात्कार) कर उन्हें स्पष्ट रूप से जान लिया है; (वह आर्य-पुद्गल भी प्रत्येक अवस्था में अविचलित रहता है)। (सचमुच) यह भी (आर्य) संघ में उत्तम रत्न है – इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो।

ये अरियसच्चानि विभावयन्ति, गम्भीरपञ्ञेन सुदेसितानि। किञ्चापि ते होन्ति भुसप्पमत्ता, न ते भवं अट्ठममादियन्ति। इदम्पि सङ्घे रतनं पणीतं, एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥

जिन्होंने गंभीर प्रज्ञावान भगवान बुद्ध के द्वारा उपदिष्ट आर्यसत्यों का भली प्रकार साक्षात्कार कर लिया है, वे (स्रोतापन्न) यदि किसी कारण से बहुत प्रमादी भी हो जायं (और साधना के अभ्यास में सतत तत्पर न भी रहें) तो भी आठवां जन्म ग्रहण नहीं करते। (अधिक से अधिक सातवें जन्म में उनकी मुक्ति निश्चित है।) (सचमुच) यह भी (आर्य) संघ में उत्तम रत्न है – इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो।

सहावस्स दस्सन-सम्पदाय, तयस्सु धम्मा जहिता भवन्ति। सक्कायदिट्ठि विचिकिच्छितं च, सीलब्बतं वा पि यदत्थि किञ्चि।

दर्शन-प्राप्ति (स्रोतापन्न फल प्राप्ति) के साथ ही उसके (स्रोतापन्न व्यक्ति के) तीन बंधन छूट जाते हैं – सत्कायदृष्टि (आत्मसम्मोह), विचिकित्सा (संशय), शीलव्रत परामर्श (विभिन्न व्रतों आदि कर्मकांडों से चित्तशुद्धि होने का विश्वास) अथवा अन्य जो कुछ भी ऐसे बंधन हों.....।

चतूहपायेहि च विप्पमुत्तो, छच्चाभिठानानि अभब्बो कातुं। इदम्पि सङ्घे रतनं पणीतं, एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥

वह चार अपाय गतियों (निरय लोकों) से पूरी तरह मुक्त हो जाता है। छह घोर पाप-कर्मों (मातृ-हत्या, पितृ-हत्या, अरहंत-हत्या, बुद्ध का रक्तपात, संघ-भेद एवं मिथ्या आचार्यों के प्रति श्रद्धा) को कभी नहीं करता। (सचमुच) यह भी (आर्य) संघ में उत्तम रत्न है – इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो।

किञ्चापि सो कम्मं करोति पापकं, कायेन वाचा उद चेतसा वा। अभब्बो सो तस्स पटिच्छादाय, अभब्बता दिट्ठपदस्स वुत्ता। इदम्पि सङ्घे रतनं पणीतं, एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥

भले ही वह (स्रोतापन्न व्यक्ति) काय, वचन अथवा मन से कोई पाप-कर्म कर भी ले, तो उसे छिपा नहीं सकता। (भगवान ने कहा है) निर्वाण का साक्षात्कार कर लेने वाला अपने दुष्कृत कर्म को छिपाने में असमर्थ है। (सचमुच) यह भी (आर्य) संघ में उत्तम रत्न है – इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो।

वनप्पगुम्बे यथा फुस्सितग्गे, गिम्हानमासे पठमस्मिं गिम्हे। तथूपमं धम्मवरं अदेसयि, निब्बानगामिं परमं हिताय। इदम्पि बुद्धे रतनं पणीतं, एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥

ग्रीष्म ऋतु के प्रारंभिक मास में जिस प्रकार सघन वन प्रफुल्लित वृक्षशिखरों से शोभायमान होता है, उसी प्रकार भगवान बुद्ध ने श्रेष्ठ धर्म का उपदेश दिया जो निर्वाण की ओर ले जाने वाला तथा परम हितकारी (यह लोकोत्तर धर्म शोभायमान) है। (सचमुच) यह भी बुद्ध में उत्तम रत्न है – इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो।

वरो वरञ्ञू वरदो वराहरो, अनुत्तरो धम्मवरं अदेसयि। इदम्पि बुद्धे रतनं पणीतं, एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥

श्रेष्ठ ने, श्रेष्ठ को जानने वाले, श्रेष्ठ को देने वाले, तथा श्रेष्ठ को लाने वाले, श्रेष्ठ (बुद्ध) ने अनुत्तर धर्म की देशना की। यह भी बुद्ध में उत्तम रत्न है – इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो।

खीणं पुराणं नवं नत्थि सम्भवं, विरत्तचित्तायतिके भवस्मिं। ते खीणबीजा अविरुळ्हिछन्दा, निब्बन्ति धीरा यथा'यं पदीपो। इदम्पि सङ्घे रतनं पणीतं, एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥

जिनके सारे पुराने कर्म क्षीण हो गये हैं और नये कर्मों की उत्पत्ति नहीं होती; पुनर्जन्म में जिनकी आसक्ति समाप्त हो गयी है, वे क्षीण-बीज (अरहंत) तृष्णा-विमुक्त हो गये हैं। वे इसी प्रकार निर्वाण को प्राप्त होते हैं जैसे (कि तेल समाप्त होने पर) यह प्रदीप। (सचमुच) यह भी (आर्य) संघ में श्रेष्ठ रत्न है – इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो।

यानीध भूतानि समागतानि, भुम्मानि वा यानि'व अन्तलिक्खे। तथागतं देवमनुस्सपूजितं, बुद्धं नमस्साम सुवत्थि होतु॥

इस समय धरती और आकाश में रहने वाले जो भी प्राणी यहां उपस्थित हैं, हम सभी समस्त देवों और मनुष्यों द्वारा पूजित तथागत बुद्ध को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

धम्मं नमस्साम सुवत्थि होतु॥

हम धर्म को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

सङ्घं नमस्साम सुवत्थि होतु॥

हम संघ को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

नमन करूं गुरुदेव को, चरणन शीश नवाय।
धरम रतन ऐसा दिया, पाप निकट नहीं आय॥

ऐसा चखाया धरम रस, बिसयन रस न लुभाय।
धरम सार ऐसा दिया, छिलके दिये छुड़ाय॥

रोम रोम किरतग हुआ, ऋण न चुकाया जाय।
जीऊं जीवन धरम का, दुखियन की सेवा करूं,
यही उचित उपाय॥

इस सेवा के पुण्य से, भला सभी का होय।
सबके मन जागे धरम, सबका मंगल होय॥

भवतु सब्ब मङ्गलं। भवतु सब्ब मङ्गलं। भवतु सब्ब मङ्गलं॥

सबका मंगल, सबका मंगल, सबका मंगल होय रे।
तेरा मंगल, तेरा मंगल, तेरा मंगल होय रे॥

इस धरती के जितने प्राणी, सबके दुखड़े दूर हों।
इस धरती के जितने प्राणी, सबके दुखड़े दूर हों।

जनम जनम के बंधन टूटें, अंतर्तम की गांठें टूटें,
मानस निरमल होय रे।

सबका मंगल, सबका मंगल, सबका मंगल होय रे।
तेरा मंगल, तेरा मंगल, तेरा मंगल होय रे।
जन जन मंगल, जन जन मंगल,
जन जन सुखिया होय रे॥

दिवस ३

जागो लोगो जगत के, बीती काली रात।
हुआ उजाला धरम का, मंगल हुआ प्रभात॥

आओ प्राणी विश्व के, सुनो धरम का ज्ञान।
इसमें सुख है शांति है, मुक्ति मोक्ष निरवाण॥

यह तो वाणी बुद्ध की, शुद्ध धरम की ज्योत।
अक्षर अक्षर में भरा, मंगल ओत परोत॥

बुध वाणी मीठी घणी, मिसरी के से बोल।
कल्याणी मंगलमयी, भरा अमृत रस घोल॥

समन्ता चक्कवाळेसु०।
धम्मस्सवणकालो०।
नमो तस्स भगवतो०।
बुद्धं सरणं गच्छामि।
इमाय धम्मानुधम्मपटिपत्तिया०।
ये च बुद्धा अतीता च०।
नत्थि मे सरणं अञ्ञं०।
इतिपि सो भगवा०।

***

यस्सानुभावतो यक्खा, नेव दस्सेन्ति भीसनं।
यम्हि चेवानुयुञ्जन्तो, रत्तिन्दिवमतन्दितो॥

सुखं सुपति सुत्तो च, पापं किञ्चि न पस्सति।
एवमादि गुणूपेतं, परित्तं तं भणामहे।
एवमादि गुणूपेतं, परित्तं तं भणामहे॥

जिसके प्रभाव से यक्ष अपना भीषण भय-रूप नहीं दिखा सकते और जिसके दिन-रात के बिना थके अभ्यास करने से सोया हुआ सुख की नींद सोता है, तथा सोया हुआ व्यक्ति कोई दुःस्वप्न (पाप) नहीं देखता है इत्यादि, इस प्रकार के गुणों से युक्त उस परित्राण को कह रहे हैं: –

करणीयमत्थकुसलेन, यन्त सन्तं पदं अभिसमेच्च।
सक्को उजू च सुहुजू च, सुवचो चस्स मुदु अनतिमानी॥

जो परमपद निर्वाण प्राप्त कर अर्थकुशल है उस समझदार व्यक्ति को चाहिए कि वह सुयोग्य बने, सरल बने, अति सरल बने, सुभाषी बने, मृदु स्वभाव वाला बने और निरभिमानी बने।

सन्तुस्सको च सुभरो च, अप्पकिच्चो च सल्लहुकवुत्ति।
सन्तिन्द्रियो च निपको च, अप्पगब्भो कुलेस्वननुगिद्धो॥

वह सदा संतुष्ट रहे, सहज सुपोष्य रहे, अनेक कामों में व्यस्त न रहे, सादगी का जीवन अपनाये, शांत इंद्रिय बने, परिपक्व प्रज्ञावान बने, लापरवाह न रहे, कुलों में अत्यंत आसक्त न रहे।

न च खुद्दं समाचरे किञ्चि, येन विञ्ञू परे उपवदेय्युं।
सुखिनो वा खेमिनो होन्तु, सब्बे सत्ता भवन्तु सुखितत्ता।
सब्बे सत्ता भवन्तु सुखितत्ता॥

वह यत्किंचित भी दुराचरण न करे जिसके कारण अन्य विज्ञजन उसे बुरा कहें। वह अपने मन में सदैव यही मैत्री-भावना करे - सारे प्राणी सुखी हों! निर्भय, क्षेमयुक्त हों! सभी सत्त्व सुख-लाभ करें।

ये केचि पाणभूतत्थि, तसा वा थावरा अनवसेसा।
दीघा वा येव महन्ता वा, मज्झिमा रस्सका अणुकथूला॥

वे प्राणी चाहे स्थावर हों या जंगम, दीर्घ (देहधारी) हों या महान (देहधारी), मध्यम (देहधारी) हों, या ह्रस्व (देहधारी), सूक्ष्म (देहधारी) हों या स्थूल (देहधारी) ....

दिट्ठा वा येव अदिट्ठा, ये च दूरे वसन्ति अविदूरे।
भूता वा सम्भवेसी वा, सब्बे सत्ता भवन्तु सुखितत्ता।
सब्बे सत्ता भवन्तु सुखितत्ता॥

दृश्य हों या अदृश्य, सुदूरवासी हों या समीपवासी, उत्पन्न हों या उत्पन्न होने वाले हों, वे सभी सत्त्व सुखपूर्वक रहें।

न परो परं निकुब्बेथ, नातिमञ्ञेथ कत्थचि नं कञ्चि।
ब्यारोसना पटिघसञ्ञा, नाञ्ञमञ्ञस्स दुक्खमिच्छेय्य॥

एक दूसरे को नहीं ठगे, किसी का कहीं भी अनादर न करे, क्रोध या वैमनस्य के वशीभूत होकर एक दूसरे के दुःख की कामना न करे।

माता यथा नियं पुत्तं, आयुसा एकपुत्तमनुरक्खे।
एवम्पि सब्बभूतेसु, मानसं भावये अपरिमाणं॥

जिस प्रकार जीवन के मूल्य पर भी मां अपने इकलौते पुत्र की रक्षा करती है, उसी प्रकार (वह भी) समस्त प्राणियों के प्रति अपने मन में अपरिमित मैत्री-भाव बढ़ाये।

मेत्तं च सब्बलोकस्मिं, मानसं भावये अपरिमाणं।
उद्धं अधो च तिरियञ्च, असम्बाधं अवेरमसपत्तं॥

वह अपरिमित मैत्री-भावना बिना किसी बाधा, घृणा और शत्रुता के, ऊपर-नीचे और आड़े-तिरछे समस्त लोकों में व्याप्त करे।

तिट्ठं चरं निसिन्नो वा, सयानो वा यावतस्स विगतमिद्धो।
एतं सतिं अधिट्ठेय्य, ब्रह्ममेतं विहारमिधमाहु॥

चाहे खड़ा हो, चलता हो, बैठा हो या लेटा हो, जब तक निद्रा के अधीन नहीं है, स्मृतिमान हो, इस अपरिमित मैत्री की भावना करे। इसी को ब्रह्म-विहार कहते हैं।

दिट्ठिं च अनुपग्गम्म, सीलवा दस्सनेन सम्पन्नो।
कामेसु विनेय्य गेधं, न हि जातु गब्भसेय्यं पुनरेती ति॥

इस प्रकार वह (मैत्री ब्रह्म-विहार करनेवाला साधक) किसी मिथ्यादृष्टि में नहीं पड़ता। वह शील ओर प्रज्ञा-दृष्टि संपन्न हो जाता है। काम-तृष्णा का नाश कर लेता है और पुनः गर्भ में नहीं आता, अर्थात गर्भ-शयन (पुनर्जन्म) के दुःख से नितांत मुक्ति पा लेता है।

यानीध भूतानि समागतानि,
भुम्मानि वा यानि'व अन्तलिक्खे।
तथागतं देवमनुस्सपूजितं,
बुद्धं नमस्साम सुवत्थि होतु।

धरती और आकाशपर रहने वाले जो भी प्राणी यहां उपस्थित हैं, हम सभी समस्त देवों तथा मनुष्यों द्वारा पूजित तथागत बुद्ध को नमस्कार करते हैं। कल्याण हो!

धम्मं नमस्साम सुवत्थि होतु।

हम धर्म को नमस्कार करते हैं। कल्याण हो!

सङ्घं नमस्साम सुवत्थि होतु॥

हम संघ को नमस्कार करते हैं। कल्याण हो!

नमन करूं गुरुदेव को, चरणन शीश नवाय।
धरम रतन ऐसा दिया, पाप समीप न आय॥

ऐसा चखाया धरम रस, बिसयन रस न लुभाय।
धरम सार ऐसा दिया, छिलके दिये छुड़ाय॥

रोम रोम किरतग हुआ, ऋण न चुकाया जाय।
जीऊं जीवन धरम का, दुखियन की सेवा करूं,
यही उचित उपाय॥

इस सेवा के पुण्य से, भला सभी का होय।
सबके मन जागे धरम, मुक्ति दुःखों से होय।
सबका मंगल होय॥

भवतु सब्ब मङ्गलं। भवतु सब्ब मङ्गलं। भवतु सब्ब मङ्गलं॥

सबका मंगल, सबका मंगल, सबका मंगल होय रे।
तेरा मंगल, तेरा मंगल, तेरा मंगल होय रे॥

दृश्य और अदृश्य सभी, जीवों का मंगल होय रे,
दृश्य और अदृश्य सभी जीवों का मंगल होय रे।

निरभय हों निरबैर बनें सब, निरभय हों निरबैर बनें
सब, सभी निरामय होंय रे॥

सबका मंगल, सबका मंगल, सबका मंगल होय रे।
तेरा मंगल, तेरा मंगल, तेरा मंगल होय रे।
जन जन मंगल, जन जन मंगल, जन जन सुखिया होय रे॥

दिवस ४

जागो लोगो जगत के, बीती काली रात।
हुआ उजाला धरम का, मंगल हुआ प्रभात॥

आओ प्राणी जगत के, सुनो धरम का ज्ञान।
इसमें सुख है, शांति है, मुक्ति मोक्ष निरवाण॥

यह तो वाणी बुद्ध की, शुद्ध धरम की ज्योत।
अक्षर अक्षर में भरा, मंगल ओत परोत॥

बुध वाणी मीठी घणी, मिसरी के से बोल।
कल्याणी मंगलमयी, भरा अमृत रस घोल॥

ये सन्ता सन्तचित्ता, तिसरण-सरणा,
एत्थ लोकन्तरे वा।
भुम्माभुम्मा च देवा, गुण-गण-गहणा,
ब्यावटा सब्बकालं॥

जो शांत-स्वभाव और शांत-चित्त हैं, त्रिशरण शरणागत हैं, इस लोक एवं अन्य लोकों में रहने वाले हैं, भूमि पर एवं आकाश में रहने वाले हैं, जो सर्वदा गुणों को ग्रहण करने में ही रत हैं, ये देव आयें! ये देव आयें!

एते आयन्तु देवा, एते आयन्तु देवा, एते आयन्तु देवा,
वर-कनक-मये, मेरुराजे वसन्तो।
सन्तो सन्तोसहेतुं, मुनिवर-वचनं, सोतुमग्गं समग्गा।
सन्तो सन्तोसहेतुं, मुनिवर-वचनं, सोतुमग्गं समग्गा॥

श्रेष्ठ स्वर्णमय सुमेरु पर्वतराज पर रहने वाले ये सभी उपस्थित देवता संतोष के लिए मुनिश्रेष्ठ के श्रेष्ठ वचन को सुनने के लिए एक साथ आयें।

नमो तस्स भगवतो०।
बुद्धं सरणं गच्छामि।
इमाय धम्मानुधम्मपटिपत्तिया०।
ये च बुद्धा अतीता च०।
नत्थि मे सरणं अञ्ञं०।
इतिपि सो भगवा०।

* * *

बाहुं सहस्समभिनिम्मित सावुधन्तं,
गिरिमेखलं उदितघोरससेनमारं।
दानादि-धम्मविधिना जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमङ्गलानि॥

गिरिमेखला नामक गजराज पर सवार अपनी ऋद्धि से निर्मित सहस्र भुजाओं में शस्त्र लिए मार को उसकी भीषण सेना सहित जिन मुनीन्द्र (भगवान बुद्ध) ने अपनी दानादि पारमिताओं के धर्मबल से जीत लिया, उनके प्रताप (तेज) से तुम्हारी जय हो! तुम्हारा मंगल हो!!

मारातिरेकमभियुज्झितसब्बरत्तिं,
घोरम्पनालवकमक्खमथद्धयक्खं,
खन्ती सुदन्तविधिना जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमङ्गलानि॥

मार से भी बढ़-चढ़ कर सारी रात युद्ध करने वाले, अत्यंत दुर्धर्ष और कठोरहृदय आलवक नामक यक्ष को जिन मुनीन्द्र (भगवान बुद्ध) ने अपनी शांति और संयम के बल से जीत लिया, उनके प्रताप (तेज) से तुम्हारी जय हो! तुम्हारा मंगल हो!!

नालागिरिं गजवरं अतिमत्तभूतं,
दावग्गि-चक्क मसनीव सुदारुणन्तं।
मेत्तम्बुसेक-विधिना जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमङ्गलानि॥

दावाग्नि-चक्र अथवा विद्युत की भांति अत्यंत दारुण और विपुल मदमत्त नालागिरि गजराज को जिन मुनीन्द्र (भगवान बुद्ध) ने अपने मैत्री-रूपी जल की वर्षा से जीत लिया, उनके प्रताप (तेज) से तुम्हारी जय हो! तुम्हारा मंगल हो!!

उक्खित्त खग्गमतिहत्थ-सुदारुणन्तं,
धावन्ति योजनपथङ्गुलिमालवन्तं।
इद्धीभिसङ्खतमनो जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमङ्गलानि॥

हाथ में तलवार उठा कर योजन तक दौड़ने वाले अत्यंत भयावह अंगुलिमाल को जिन मुनीन्द्र (भगवान बुद्ध) ने अपने ऋद्धिबल से जीत लिया, उनके प्रताप (तेज) से तुम्हारी जय हो! तुम्हारा मंगल हो!!

कत्वान कट्ठमुदरं इव गब्भिनीया,
चिञ्चाय दुट्ठवचनं जनकाय-मज्झे।
सन्तेन सोमविधिना जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमङ्गलानि॥

पेट पर काठ बांधकर गर्भिणी का स्वांग करने वाली चिञ्चा के द्वारा जनता के मध्य कहे गये अपशब्दों को जिन मुनीन्द्र (भगवान बुद्ध) ने अपने शांत और सौम्य बल से जीत लिया, उनके प्रताप (तेज) से तुम्हारी जय हो! तुम्हारा मंगल हो!!

सच्चं विहाय मतिसच्चक-वादकेतुं,
वादाभिरोपितमनं अतिअन्धभूतं।
पञ्ञापदीपजलितो जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमङ्गलानि॥

सत्य-विमुख, असत्यवाद के पोषक, अभिमानी, वादविवाद-परायण और अहंकार से अत्यंत अंधे हुए सच्चक नामक परिव्राजक को जिन मुनीन्द्र (भगवान बुद्ध) ने प्रज्ञा-प्रदीप जला कर जीत लिया, उनके प्रताप (तेज) से तुम्हारी जय हो! तुम्हारा मंगल हो!!

नन्दोपनन्द भुजगं विविधं महिद्धिं,
पुत्तेन थेर भुजगेन दमापयन्तो।
इद्धूपदेसविधिना जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमङ्गलानि॥

विविध प्रकार की महान ऋद्धियों से संपन्न नन्दोपनन्द नामक भुजंग को अपने पुत्र (शिष्य) महामौद्गल्यायन स्थविर द्वारा अपनी ऋद्धि-शक्ति और उपदेश के बल से दमित कराते हुए जिन मुनीन्द्र (भगवान बुद्ध) ने जीत लिया, उनके प्रताप (तेज) से तुम्हारी जय हो! तुम्हारा मंगल हो!!

दुग्गाहदिट्ठिभुजगेन सुदट्ठ-हत्थं,
ब्रह्मं विसुद्धिजुतिमिद्धि बकाभिधानं।
ञाणागदेन विधिना जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमङ्गलानि॥

मिथ्यादृष्टि रूपी भयानक सर्प द्वारा डसे गये, शुद्ध- ज्योतिर्मय ऋद्धिसंपन्न बक ब्रह्मा को जिन मुनीन्द्र (भगवान बुद्ध) ने ज्ञान-रूपी औषध से जीत लिया, उनके प्रताप (तेज) से तुम्हारी जय हो! तुम्हारा मंगल हो!!

यानीध भूतानि समागतानि,
भुम्मानि वा यानि'व अन्तलिक्खे।
तथागतं देवमनुस्सपूजितं,
बुद्धं नमस्साम सुवत्थि होतु।

धरती या आकाश में रहने वाले जो भी प्राणी यहां उपस्थित हैं, हम सभी समस्त देवों और मनुष्यों द्वारा पूजित तथागत बुद्ध को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

धम्मं नमस्साम सुवत्थि होतु।

हम धर्म को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

सङ्घं नमस्साम सुवत्थि होतु॥

हम संघ को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

नमन करूं गुरुदेव को, सादर शीश नवाय।
धरम रतन ऐसा दिया, पाप पनप नहीं पाय॥

ऐसा चखाया धरम रस, बिसयन रस न लुभाय।
धरम सार ऐसा दिया, छिलके दिये छुड़ाय॥

रोम रोम किरतग हुआ, ऋण न चुकाया जाय।
जीऊं जीवन धरम का, दुखियन की सेवा करूं,
यह ही उचित उपाय॥

आज धरम का दिवस है, देऊं धरम का दान।
जो आये तपने यहां, हो सबका कल्याण,
हो सबका कल्याण॥

भवतु सब्ब मङ्गलं। भवतु सब्ब मङ्गलं। भवतु सब्ब मङ्गलं॥

सबका मंगल, सबका मंगल, सबका मंगल होय रे।
तेरा मंगल, तेरा मंगल, तेरा मंगल होय रे॥

जो जो आये तप करने को, जो जो आये तप करने को,
सबके दुखड़े दूर हों, सबके दुखड़े दूर हों।

सबके मन प्रज्ञा जग जाये, सबके मन प्रज्ञा जग जाये,
अन्तस निरमल होय रे, अन्तस निरमल होय रे॥

सबका मंगल, सबका मंगल, सबका मंगल होय रे।
तेरा मंगल, तेरा मंगल, तेरा मंगल होय रे।
जन जन मंगल, जन जन मंगल, जन जन सुखिया होय रे॥

दिवस ५

समन्ता चक्क वाळेसु०।
धम्मस्सवणक ालो०।
नमो तस्स भगवतो०।
बुद्धं सरणं गच्छामि।
इमाय धम्मानुधम्मपटिपत्तिया०।

ꕥꕥꕥ

पट्ठानपालि। तिक पट्ठानं। पच्चयनिदानं। पच्चयुद्देसो।

हेतुपच्चयो, आरम्मणपच्चयो, अधिपतिपच्चयो, अनन्तरपच्चयो, समनन्तरपच्चयो, सहजातपच्चयो, अञ्ञमञ्ञपच्चयो, निस्सयपच्चयो, उपनिस्सयपच्चयो, पुरेजातपच्चयो, पच्छाजातपच्चयो, आसेवनपच्चयो, क म्मपच्चयो, विपाक पच्चयो, आहारपच्चयो, इन्द्रियपच्चयो, झानपच्चयो, मग्गपच्चयो, सम्पयुत्तपच्चयो, विप्पयुत्तपच्चयो, अत्थिपच्चयो, नत्थिपच्चयो, विगतपच्चयो, अविगतपच्चयो ति।

पट्ठानपालि। तिक पट्ठान। प्रत्यय-निदान।

प्रत्ययों क ा परिचय

प्रत्यय हैं – हेतु। आलंबन। अधिपति। अनंतर। समनंतर। सहजात। अन्योन्य। निश्रय। उपनिश्रय। पुरेजात। पश्चाज्जात। आसेवन। क र्म। विपाक । आहार। इंद्रिय। ध्यान। मार्ग। संप्रयुक्त। विप्रयुक्त। अस्ति। नास्ति। विगत। अविगत।

पच्चयनिद्देसो

हेतुपच्चयोति – हेतू हेतुसम्पयुत्तक ानं धम्मानं तंसमुट्ठानानं च रूपानं हेतुपच्चयेन पच्चयो।

प्रत्ययों क ा विश्लेषण

हेतु-प्रत्यय –हेतु हेतुओं से संयुक्त धर्मों और उनसे उत्पन्न होने वाले रूपों के साथ हेतु-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

आरम्मणपच्चयोति – रूपायतनं चक्खुविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तक ानं च धम्मानं आरम्मणपच्चयेन पच्चयो। सद्दायतनं सोतविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तक ानं च धम्मानं आरम्मणपच्चयेन पच्चयो। गन्धायतनं घानविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तक ानं च धम्मानं आरम्मणपच्चयेन पच्चयो। रसायतनं जिव्हाविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तक ानं च धम्मानं आरम्मणपच्चयेन पच्चयो। फोट्ठब्बायतनं क ायविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तक ानं च धम्मानं आरम्मणपच्चयेन पच्चयो। रूपायतनं सद्दायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं मनोधातुया तंसम्पयुत्तक ानं च धम्मानं आरम्मणपच्चयेन पच्चयो। सब्बे धम्मा मनोविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तक ानं च धम्मानं आरम्मणपच्चयेन पच्चयो।

यं यं धम्मं आरब्भ ये ये धम्मा उप्पज्जन्ति चित्तचेतसिक ा धम्मा, ते ते धम्मा तेसं तेसं धम्मानं आरम्मणपच्चयेन पच्चयो।

आलंबन-प्रत्यय –रूप-आयतन चक्षुविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ आलंबन-प्रत्यय से संबद्ध होता है। शब्द-आयतन श्रोत्रविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ आलंबन-प्रत्यय से संबद्ध होता है। गंध-आयतन घ्राणविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ आलंबन-प्रत्यय से संबद्ध होता है। रस-आयतन जिव्हाविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ आलंबन-प्रत्यय से संबद्ध होता है। स्प्रष्टव्य-आयतन क ायविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ आलंबन-प्रत्यय से संबद्ध होता है। रूप-आयतन, शब्द-आयतन, गंध-आयतन, रस-आयतन और स्प्रष्टव्य-आयतन मनोधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ आलंबन-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। सारे धर्म मनोविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ आलंबन-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

जिस जिस धर्म को लक्ष्य क र जो जो चित्त चैतसिक धर्म उत्पन्न होते हैं, वे वे धर्म उन उन धर्मों के साथ आलंबन-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

अधिपतिपच्चयोति – छन्दाधिपति छन्दसम्पयुत्तक ानं धम्मानं तंसमुट्ठानानं च रूपानं अधिपतिपच्चयेन पच्चयो। विरियाधिपति विरियसम्पयुत्तक ानं धम्मानं तंसमुट्ठानानं च रूपानं अधिपति- पच्चयेन पच्चयो। चित्ताधिपति

चित्तसम्पयुत्तकानं धम्मानं तंसमुट्ठानानं च रूपानं अधिपतिपच्चयेन पच्चयो। वीमंसाधिपति वीमंससम्पयुत्तकानं धम्मानं तंसमुट्ठानानं च रूपानं अधिपतिपच्चयेन पच्चयो।

यं यं धम्मं गरुं कत्वा ये ये धम्मा उप्पज्जन्ति चित्तचेतसिका धम्मा, ते ते धम्मा तेसं तेसं धम्मानं अधिपतिपच्चयेन पच्चयो।

अधिपति-प्रत्यय – प्रबल कामना कामना से संयुक्त धर्मों और उनसे उत्पन्न होने वाले रूपों के साथ अधिपति-प्रत्यय से संबद्ध होती है। प्रबल वीर्य वीर्य से संयुक्त धर्मों और उनसे उत्पन्न होने वाले रूपों के साथ अधिपति-प्रत्यय से संबद्ध होता है। प्रबल चित्त चित्त से संयुक्त धर्मों और उनसे उत्पन्न होने वाले रूपों के साथ अधिपति-प्रत्यय से संबद्ध होता है। प्रबल मीमांसा मीमांसा से संयुक्त धर्मों और उनसे उत्पन्न होने वाले रूपों के साथ अधिपति-प्रत्यय से संबद्ध होती है।

जिस जिस धर्म को विशेष महत्त्व देते हुए जो जो चित्त चैतसिक धर्म उत्पन्न होते हैं, वे वे धर्म उन उन धर्मों के साथ अधिपति-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

अनन्तरपच्चयोति – चक्खुविञ्ञाणधातु तंसम्पयुत्तका च धम्मा मनोधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो। मनोधातु तंसम्पयुत्तका च धम्मा मनोविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो।

सोतविञ्ञाणधातु तंसम्पयुत्तका च धम्मा मनोधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो। मनोधातु तंसम्पयुत्तका च धम्मा मनोविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो।

घानविञ्ञाणधातु तंसम्पयुत्तका च धम्मा मनोधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो। मनोधातु तंसम्पयुत्तका च धम्मा मनोविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो।

जिव्हाविञ्ञाणधातु तंसम्पयुत्तका च धम्मा मनोधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो। मनोधातु तंसम्पयुत्तका च धम्मा मनोविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो।

कायविञ्ञाणधातु तंसम्पयुत्तका च धम्मा मनोधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो। मनोधातु तंसम्पयुत्तका च धम्मा मनोविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो।

पुरिमा पुरिमा कुसला धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं कुसलानं धम्मानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो। पुरिमा पुरिमा कुसला धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं अब्याकतानं धम्मानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो।

पुरिमा पुरिमा अकुसला धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं अकुसलानं धम्मानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो। पुरिमा पुरिमा अकुसला धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं अब्याकतानं धम्मानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो।

पुरिमा पुरिमा अब्याकता धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं अब्याकतानं धम्मानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो। पुरिमा पुरिमा अब्याकता धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं कुसलानं धम्मानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो। पुरिमा पुरिमा अब्याकता धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं अकुसलानं धम्मानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो।

येसं येसं धम्मानं अनन्तरा ये ये धम्मा उप्पज्जन्ति चित्तचेतसिका धम्मा, ते ते धम्मा तेसं तेसं धम्मानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो।

अनंतर-प्रत्यय – चक्षुविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्म मनोधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। मनोधातु और उससे संयुक्त धर्म मनोविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

श्रोत्रविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्म मनोधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। मनोधातु और उससे संयुक्त धर्म मनोविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

घ्राणविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्म मनोधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। मनोधातु और उससे संयुक्त धर्म मनोविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

जिव्हाविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्म मनोधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। मनोधातु और उससे संयुक्त धर्म मनोविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

कायविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्म मनोधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। मनोधातु और उससे संयुक्त धर्म मनोविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

पूर्ववर्ती कुशल धर्म उत्तरवर्ती कुशल धर्मों के साथ अनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। पूर्ववर्ती कुशल धर्म उत्तरवर्ती अव्याकृत धर्मों के साथ अनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

पूर्ववर्ती अकुशल धर्म उत्तरवर्ती अकुशल धर्मों के साथ अनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। पूर्ववर्ती अकुशल धर्म उत्तरवर्ती अव्याकृत धर्मों के साथ अनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

पूर्ववर्ती अव्याकृत धर्म उत्तरवर्ती अव्याकृत धर्मों के साथ अनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। पूर्ववर्ती अव्याकृत धर्म उत्तरवर्ती कुशल धर्मों के साथ अनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। पूर्ववर्ती अव्याकृत धर्म उत्तरवर्ती अकुशल धर्मों के साथ अनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

जिन जिन धर्मों के अनंतर जो जो चित्त चैतसिक धर्म उत्पन्न होते हैं, वे वे धर्म उन उन धर्मों के साथ अनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

समनन्तरपच्चयोति – चक्खुविञ्ञाणधातु तंसम्पयुत्तका च धम्मा मनोधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं समनन्तरपच्चयेन पच्चयो। मनोधातु तंसम्पयुत्तका च धम्मा मनोविञ्ञाणधातुया तसम्पयुत्तकानं च धम्मानं समनन्तरपच्चयेन पच्चयो।

सोतविञ्ञाणधातु तंसम्पयुत्तका च धम्मा मनोधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं समनन्तरपच्चयेन पच्चयो। मनोधातु तंसम्पयुत्तका च धम्मा मनोविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं समनन्तरपच्चयेन पच्चयो।

घाणविञ्ञाणधातु तंसम्पयुत्तका च धम्मा मनोधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं समनन्तरपच्चयेन पच्चयो। मनोधातु तंसम्पयुत्तका च धम्मा मनोविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं समनन्तरपच्चयेन पच्चयो।

जिव्हाविञ्ञाणधातु तंसम्पयुत्तका च धम्मा मनोधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं समनन्तरपच्चयेन पच्चयो। मनोधातु तंसम्पयुत्तका च धम्मा मनोविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं समनन्तरपच्चयेन पच्चयो।

कायविञ्ञाणधातु तंसम्पयुत्तका च धम्मा मनोधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं समनन्तरपच्चयेन पच्चयो। मनोधातु तंसम्पयुत्तका च धम्मा मनोविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं समनन्तरपच्चयेन पच्चयो।

पुरिमा पुरिमा कुसला धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं कुसलानं धम्मानं समनन्तरपच्चयेन पच्चयो। पुरिमा पुरिमा कुसला धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं अब्याकतानं धम्मानं समनन्तरपच्चयेन पच्चयो।

पुरिमा पुरिमा अकुसला धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं अकुसलानं धम्मानं समनन्तरपच्चयेन पच्चयो। पुरिमा पुरिमा अकुसला धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं अब्याकतानं धम्मानं समनन्तरपच्चयेन पच्चयो।

पुरिमा पुरिमा अब्याकता धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं अब्याकतानं धम्मानं समनन्तरपच्चयेन पच्चयो। पुरिमा पुरिमा अब्याकता धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं कुसलानं धम्मानं समनन्तरपच्चयेन पच्चयो। पुरिमा पुरिमा अब्याकता धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं अकुसलानं धम्मानं समनन्तरपच्चयेन पच्चयो।

येसं येसं धम्मानं समनन्तरा ये ये धम्मा उप्पज्जन्ति चित्तचेतसिका धम्मा, ते ते धम्मा तेसं तेसं धम्मानं समनन्तरपच्चयेन पच्चयो।

समनंतर-प्रत्यय – चक्षुविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्म मनोधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ समनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। मनोधातु और उससे संयुक्त धर्म मनोविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ समनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

श्रोत्रविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्म मनोधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ समनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। मनोधातु और उससे संयुक्त धर्म मनोविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ समनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

घ्राणविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्म मनोधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ समनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। मनोधातु और उससे संयुक्त धर्म मनोविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ समनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

जिव्हाविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्म मनोधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ समनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। मनोधातु और उससे संयुक्त धर्म मनोविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ समनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

कायविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्म मनोधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ समनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। मनोधातु और उससे संयुक्त धर्म मनोविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ समनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

पूर्ववर्ती कुशल धर्म उत्तरवर्ती कुशल धर्मों के साथ समनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। पूर्ववर्ती कुशल धर्म उत्तरवर्ती अव्याकृत धर्मों के साथ समनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

पूर्ववर्ती अकुशल धर्म उत्तरवर्ती अकुशल धर्मों के साथ समनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। पूर्ववर्ती अकुशल धर्म उत्तरवर्ती अव्याकृत धर्मों के साथ समनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

पूर्ववर्ती अव्याकृत धर्म उत्तरवर्ती अव्याकृत धर्मों के साथ समनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। पूर्ववर्ती अव्याकृत धर्म उत्तरवर्ती कुशल धर्मों के साथ समनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। पूर्ववर्ती अव्याकृत धर्म उत्तरवर्ती अकुशल धर्मों के साथ समनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

जिन जिन धर्मों के अनंतर जो जो चित्त चैतसिक धर्म उत्पन्न होते हैं, वे वे धर्म उन उन धर्मों के साथ समनंतर-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

सहजातपच्चयोति – चत्तारो खन्धा अरूपिनो अञ्ञमञ्ञं सहजातपच्चयेन पच्चयो। चत्तारो महाभूता अञ्ञमञ्ञं सहजातपच्चयेन पच्चयो। ओक्कन्तिक्खणे नामरूपं अञ्ञमञ्ञं सहजातपच्चयेन पच्चयो। चित्तचेतसिका धम्मा चित्तसमुट्ठानानं रूपानं सहजातपच्चयेन पच्चयो। महाभूता उपादारूपानं सहजातपच्चयेन पच्चयो। रूपिनो धम्मा अरूपीनं धम्मानं किञ्चिकाले सहजातपच्चयेन पच्चयो, किञ्चिकाले न सहजातपच्चयेन पच्चयो।

सहजात-प्रत्यय –चारों अरूपी स्कंधएक दूसरे के साथ सहजात-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। चारों महाभूत एक दूसरे के साथ सहजात-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। प्रतिसंधि के क्षण में नाम और रूप एक दूसरे के साथ सहजात-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। चित्त चैतसिक धर्म चित्त में उत्पन्न होने वाले रूपों के साथ सहजात-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। रूपी धर्म अरूपी धर्मों के साथ कभी-कभी सहजात-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं और कभी-कभी सहजात-प्रत्यय से संबद्ध नहीं होते हैं।

अञ्ञमञ्ञपच्चयोति – चत्तारो खन्धा अरूपिनो अञ्ञमञ्ञपच्चयेन पच्चयो। चत्तारो महाभूता अञ्ञमञ्ञपच्चयेन पच्चयो। ओक्कन्तिक्खणे नामरूपं अञ्ञमञ्ञपच्चयेन पच्चयो।

अन्योन्य-प्रत्यय –चारों अरूपी स्कंधअन्योन्य-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। चारों महाभूत अन्योन्य-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। प्रतिसंधि के क्षण में नाम और रूप अन्योन्य-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

निस्सयपच्चयोति – चत्तारो खन्धा अरूपिनो अञ्ञमञ्ञं निस्सयपच्चयेन पच्चयो। चत्तारो महाभूता अञ्ञमञ्ञं निस्सयपच्चयेन पच्चयो। ओक्कन्तिक्खणे नामरूपं अञ्ञमञ्ञं निस्सयपच्चयेन पच्चयो। चित्तचेतसिका धम्मा चित्तसमुट्ठानानं रूपानं निस्सयपच्चयेन पच्चयो। महाभूता उपादारूपानं निस्सयपच्चयेन पच्चयो।

चक्खायतनं चक्खुविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं निस्सयपच्चयेन पच्चयो। सोतायतनं सोतविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानंच धम्मानं निस्सयपच्चयेन पच्चयो। घानायतनं घानविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं निस्सयपच्चयेन पच्चयो। जिव्हायतनं जिव्हाविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं निस्सयपच्चयेन पच्चयो। कायायतनं कायविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं निस्सयपच्चयेन पच्चयो।

यं रूपं निस्साय मनोधातु च मनोविञ्ञाणधातु च वत्तन्ति, तं रूपं मनोधातुया च मनोविञ्ञाणधातुया च तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं निस्सयपच्चयेन पच्चयो।

निश्रय-प्रत्यय –चारों अरूपी स्कंधएक दूसरे के साथ निश्रय-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। चारों महाभूत एक दूसरे के साथ निश्रय-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। प्रतिसंधि के क्षण में नाम और रूप एक दूसरे के साथ निश्रय-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। चित्त चैतसिक धर्म चित्त में उत्पन्न होने वाले रूपों के साथ निश्रय-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। महाभूत उद्भूत रूपों के साथ निश्रय-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

चक्षु-आयतन चक्षुविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ निश्रय-प्रत्यय से संबद्ध होता है। श्रोत्र-आयतन श्रोत्रविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ निश्रय-प्रत्यय से संबद्ध होता है। घ्राण-आयतन घ्राणविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ निश्रय-प्रत्यय से संबद्ध होता है। जिव्हा-आयतन जिव्हाविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ निश्रय-प्रत्यय से संबद्ध होता है। काय-आयतन कायविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ निश्रय-प्रत्यय से संबद्ध होता है।

जिस रूप के आश्रय से मनोधातु और मनोविज्ञानधातु स्थित होते हैं, वह रूप मनोधातु और मनोविज्ञानधातु और उनसे संयुक्त धर्मों के साथ निश्रय-प्रत्यय से संबद्ध होता है।

उपनिस्सयपच्चयोति – पुरिमा पुरिमा कुसला धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं कुसलानं धम्मानं उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो। पुरिमा पुरिमा कुसला धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं अकुसलानं धम्मानं केसञ्चि उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो। पुरिमा पुरिमा कुसला धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं अब्याकतानं धम्मानं उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो।

पुरिमा पुरिमा अकुसला धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं अकुसलानं धम्मानं उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो। पुरिमा पुरिमा अकुसला धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं कुसलानं धम्मानं केसञ्चि उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो। पुरिमा पुरिमा अकुसला धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं अब्याकतानं धम्मानं उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो।

पुरिमा पुरिमा अब्याकता धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं अब्याकतानं धम्मानं उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो। पुरिमा पुरिमा अब्याकता धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं कुसलानं धम्मानं उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो। पुरिमा पुरिमा अब्याकता धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं अकुसलानं धम्मानं उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो।

उतुभोजनं पि उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो। पुग्गलो पि उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो। सेनासनं पि उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो।

उपनिश्रय-प्रत्यय – पूर्ववर्ती कुशल धर्म उत्तरवर्ती कुशल धर्मों के साथ उपनिश्रय- प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। पूर्ववर्ती कुशल धर्म उत्तरवर्ती अकुशल धर्मों में से कुछ के साथ उपनिश्रय-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। पूर्ववर्ती कुशल धर्म उत्तरवर्ती अव्याकृत धर्मो के साथ उपनिश्रय-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

पूर्ववर्ती अकुशल धर्म उत्तरवर्ती अकुशल धर्मों के साथ उपनिश्रय-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। पूर्ववर्ती अकुशल धर्म उत्तरवर्ती कुशल धर्मों में से कुछ के साथ उपनिश्रय-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। पूर्ववर्ती अकुशल धर्म उत्तरवर्ती अव्याकृत धर्मों के साथ उपनिश्रय-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

पूर्ववर्ती अव्याकृत धर्म उत्तरवर्ती अव्याकृत धर्मों के साथ उपनिश्रय-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। पूर्ववर्ती अव्याकृत धर्म उत्तरवर्ती कुशल धर्मों के साथ उपनिश्रय-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। पूर्ववर्ती अव्याकृत धर्म उत्तरवर्ती अकुशल धर्मों के साथ उपनिश्रय-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

ऋतु और भोजन भी उपनिश्रय-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। व्यक्ति भी उपनिश्रय-प्रत्यय से संबद्ध होता है। शयनासन भी उपनिश्रय-प्रत्यय से संबद्ध होता है।

पुरेजातपच्चयोति – चक्खायतनं चक्खुविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं पुरेजातपच्चयेन पच्चयो। सोतायतनं सोतविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं पुरेजातपच्चयेन पच्चयो। घानायतनं घानविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं पुरेजातपच्चयेन पच्चयो। जिव्हायतनं जिव्हाविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं पुरेजातपच्चयेन पच्चयो। कायायतनं कायविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं पुरेजातपच्चयेन पच्चयो।

रूपायतनं चक्खुविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं पुरेजातपच्चयेन पच्चयो। सद्दायतनं सोतविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं पुरेजातपच्चयेन पच्चयो। गन्धायतनं घानविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं पुरेजातपच्चयेन पच्चयो। रसायतनं जिव्हाविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं पुरेजातपच्चयेन पच्चयो। फोट्ठब्बायतनं कायविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं पुरेजातपच्चयेन पच्चयो। रूपायतनं सद्दायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं मनोधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं पुरेजातपच्चयेन पच्चयो।

यं रूपं निस्साय मनोधातु च मनोविञ्ञाणधातु च वत्तन्ति, तं रूपं मनोधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं पुरेजातपच्चयेन पच्चयो। मनोविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं किञ्चिकाले पुरेजातपच्चयेन पच्चयो, किञ्चिकाले न पुरेजातपच्चयेन पच्चयो।

पुरेजात-प्रत्यय – चक्षु-आयतन चक्षुविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ पुरेजात-प्रत्यय से संबद्ध होता है। श्रोत्र-आयतन श्रोत्रविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ पुरेजात-प्रत्यय से संबद्ध होता है। घ्राण-आयतन घ्राणविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ पुरेजात-प्रत्यय से संबद्ध होता है। जिव्हा-आयतन जिव्हाविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ पुरेजात-प्रत्यय से संबद्ध होता है। काय-आयतन कायविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ पुरेजात-प्रत्यय से संबद्ध होता है।

रूप-आयतन चक्षुविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ पुरेजात-प्रत्यय से संबद्ध होता है। शब्द-आयतन श्रोत्रविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ पुरेजात-प्रत्यय से संबद्ध होता है। गंध-आयतन घ्राणविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ पुरेजात-प्रत्यय से संबद्ध होता है। रस-आयतन जिव्हाविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ पुरेजात-प्रत्यय से संबद्ध होता है। स्प्रष्टव्य-आयतन कायविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ

पुरेजात-प्रत्यय से संबद्ध होता है। रूप-आयतन, शब्द-आयतन, गंध-आयतन, रस-आयतन, स्प्रष्टव्य-आयतन मनोधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ पुरेजात-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

जिस रूप के आश्रय से मनोधातु और मनोविज्ञानधातु स्थित होते हैं, वह रूप मनोधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ पुरेजात-प्रत्यय से संबद्ध होता है। वह मनोविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ किसी समय पुरेजात-प्रत्यय से संबद्ध होता है और किसी समय पुरेजात-प्रत्यय से संबद्ध नहीं होता है।

पच्छाजातपच्चयोति – पच्छाजाता चित्तचेतसिका धम्मा पुरेजातस्स इमस्स कायस्स पच्छाजातपच्चयेन पच्चयो।

पश्चाज्जात-प्रत्यय – बाद में उत्पन्न हुए चित्त चैतसिक धर्म पहले उत्पन्न हुए इस शरीर के साथ पश्चाज्जात-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

आसेवनपच्चयोति – पुरिमा पुरिमा कुसला धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं कुसलानं धम्मानं आसेवनपच्चयेन पच्चयो। पुरिमा पुरिमा अकुसला धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं अकुसलानं धम्मानं आसेवनपच्चयेन पच्चयो। पुरिमा पुरिमा किरियाब्याकता धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं किरियाब्याकतानं धम्मानं आसेवनपच्चयेन पच्चयो।

आसेवन-प्रत्यय – पूर्ववर्ती कुशल धर्म उत्तरवर्ती कुशल धर्मों के साथ आसेवन-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। पूर्ववर्ती अकुशल धर्म उत्तरवर्ती अकुशल धर्मों के साथ आसेवन-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। पूर्ववर्ती क्रियाशील अव्याकृत धर्म उत्तरवर्ती क्रियाशील अव्याकृत धर्मों के साथ आसेवन-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

कम्मपच्चयोति – कुसलाकुसलं कम्मं विपाकानं खन्धानं कटत्ता च रूपानं कम्मपच्चयेन पच्चयो। चेतना सम्पयुत्तकानं धम्मानं तंसमुट्ठानानं च रूपानं कम्मपच्चयेन पच्चयो।

कर्म-प्रत्यय – कुशल- अकुशल कर्म विपाक-स्कंधोंऔर कर्म से उत्पन्न हुए रूपों के साथ कर्म-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। चेतना अपने संयुक्त धर्मों और उससे उत्पन्न होने वाले रूपों के साथ कर्म-प्रत्यय से संबद्ध होती है।

विपाक पच्चयोति – विपाका चत्तारो खन्धा अरूपिनो अञ्ञमञ्ञं विपाकपच्चयेन पच्चयो।

विपाक-प्रत्यय – चारों अरूपी विपाक-स्कंध एक दूसरे के साथ विपाक-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

आहारपच्चयोति – कबळीकारोआहारो इमस्स कायस्स आहारपच्चयेन पच्चयो। अरूपिनो आहारा सम्पयुत्तकानं धम्मानं तं तंसमुट्ठानानं च रूपानं आहारपच्चयेन पच्चयो।

आहार-प्रत्यय – कौर कौर करके खाया जाने वाला आहार इस काया के साथ आहार-प्रत्यय से संबद्ध होता है। अरूपी आहार अपने संयुक्त धर्मों और उनसे उत्पन्न होने वाले रूपों के साथ आहार-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

इन्द्रियपच्चयोति – चक्खुन्द्रियं चक्खुविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानंच धम्मानं इन्द्रियपच्चयेन पच्चयो। सोतिन्द्रियं सोतविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानंच धम्मानं इन्द्रियपच्चयेन पच्चयो। घानिन्द्रियं घानविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं इन्द्रियपच्चयेन पच्चयो। जिव्हिन्द्रियं जिव्हाविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं इन्द्रियपच्चयेन पच्चयो। कायिन्द्रियं कायविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं इन्द्रियपच्चयेन पच्चयो। रूपजीवितिन्द्रियं कटत्ता रूपानं इन्द्रियपच्चयेन पच्चयो।

अरूपिनो इन्द्रिया सम्पयुत्तकानं धम्मानं तंसमुट्ठानानं च रूपानं इन्द्रियपच्चयेन पच्चयो।

इंद्रिय-प्रत्यय – चक्षु-इंद्रिय चक्षुविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ इंद्रिय-प्रत्यय से संबद्ध होती है। श्रोत्र-इंद्रिय श्रोत्रविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ इंद्रिय-प्रत्यय से संबद्ध होती है। घ्राण-इंद्रिय घ्राणविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ इंद्रिय-प्रत्यय से संबद्ध होती है। जिव्हा-इंद्रिय जिव्हाविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ इंद्रिय-प्रत्यय से संबद्ध होती है। काय-इंद्रिय कायविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ इंद्रिय-प्रत्यय से संबद्ध होती है। रूपजीवित-इंद्रिय कर्म से उत्पन्न हुए रूपों के साथ इंद्रिय-प्रत्यय से संबद्ध होती है।

अरूपी इंद्रियां अपने संयुक्त धर्मों और उससे उत्पन्न होने वाले रूपों के साथ इंद्रिय-प्रत्यय से संबद्ध होती हैं।

झानपच्चयोति – झानङ्गानि झानसम्पयुत्तकानं धम्मानं तंसमुट्ठानानं च रूपानं झानपच्चयेन पच्चयो।

ध्यान-प्रत्यय – ध्यान के अंग ध्यान से संयुक्त धर्मों और उनसे उत्पन्न होने वाले रूपों के साथ ध्यान-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

मग्गपच्चयोति – मग्गङ्गानि मग्गसम्पयुत्तकानं धम्मानं तंसमुट्ठानानं च रूपानं मग्गपच्चयेन पच्चयो।

मार्ग-प्रत्यय –मार्ग के अंग मार्ग से संयुक्त धर्मों और उनसे उत्पन्न होने वाले रूपों के साथ मार्ग-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

सम्पयुत्तपच्चयो ति – चत्तारो खन्धा अरूपिनो अञ्ञमञ्ञं सम्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो।

संप्रयुक्त-प्रत्यय – चारों अरूपी स्कंध एक दूसरे के साथ संप्रयुक्त-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

विप्पयुत्तपच्चयोति – रूपिनो धम्मा अरूपीनं धम्मानं विप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो। अरूपिनो धम्मा रूपीनं धम्मानं विप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो।

विप्रयुक्त-प्रत्यय –रूपी धर्म अरूपी धर्मों के साथ विप्रयुक्त-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। अरूपी धर्म रूपी धर्मों के साथ विप्रयुक्त-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

अत्थिपच्चयोति – चत्तारो खन्धा अरूपिनो अञ्ञमञ्ञं अत्थिपच्चयेन पच्चयो। चत्तारो महाभूता अञ्ञमञ्ञं अत्थिपच्चयेन पच्चयो। ओक्कन्तिक्खणे नामरूपं अञ्ञमञ्ञं अत्थिपच्चयेन पच्चयो। चित्तचेतसिका धम्मा चित्तसमुट्ठानानं रूपानं अत्थिपच्चयेन पच्चयो। महाभूता उपादारूपानं अत्थिपच्चयेन पच्चयो।

चक्खायतनं चक्खुविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अत्थिपच्चयेन पच्चयो। सोतायतनं सोतविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानंच धम्मानं अत्थिपच्चयेन पच्चयो। घानायतनं घानविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अत्थिपच्चयेन पच्चयो। जिव्हायतनं जिव्हाविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानंच धम्मानं अत्थिपच्चयेन पच्चयो। कायायतनं कायविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अत्थिपच्चयेन पच्चयो।

रूपायतनं चक्खुविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अत्थिपच्चयेन पच्चयो। सद्दायतनं सोतविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानंच धम्मानं अत्थिपच्चयेन पच्चयो। गन्धायतनं घानविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अत्थिपच्चयेन पच्चयो। रसायतनं जिव्हाविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानंच धम्मानं अत्थिपच्चयेन पच्चयो। फोट्ठब्बायतनं कायविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानंच धम्मानं अत्थिपच्चयेन पच्चयो। रूपायतनं सद्दायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं मनोधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अत्थिपच्चयेन पच्चयो।

यं रूपं निस्साय मनोधातु च मनोविञ्ञाणधातु च वत्तन्ति, तं रूपं मनोधातुया च मनोविञ्ञाणधातुया च तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अत्थिपच्चयेन पच्चयो।

अस्ति-प्रत्यय –चारों अरूपी स्कंधएक दूसरे के साथ अस्ति-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। चारों महाभूत एक दूसरे के साथ अस्ति-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। प्रतिसंधि के क्षण में नाम और रूप एक दूसरे के साथ अस्ति-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। चित्त चैतसिक धर्म चित्त से उत्पन्न होने वाले रूपों के साथ अस्ति-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। महाभूत उद्भूत रूपों के साथ अस्ति-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

चक्षु-आयतन चक्षुविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अस्ति-प्रत्यय से संबद्ध होता है। श्रोत्र-आयतन श्रोत्रविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अस्ति-प्रत्यय से संबद्ध होता है। घ्राण-आयतन घ्राणविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अस्ति-प्रत्यय से संबद्ध होता है। जिव्हा-आयतन जिव्हाविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अस्ति-प्रत्यय से संबद्ध होता है। काय-आयतन कायविज्ञानधातुऔर उससे संयुक्त धर्मों के साथ अस्ति-प्रत्यय से संबद्ध होता है।

रूप-आयतन चक्षुविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अस्ति-प्रत्यय से संबद्ध होता है। शब्द-आयतन श्रोत्रविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अस्ति-प्रत्यय से संबद्ध होता है। गंध-आयतन घ्राणविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अस्ति-प्रत्यय से संबद्ध होता है। रस-आयतन जिव्हाविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अस्ति-प्रत्यय से संबद्ध होता है। स्प्रष्टव्य-आयतन कायविज्ञानधातुऔर उससे संयुक्त धर्मों के साथ अस्ति-प्रत्यय से संबद्ध होता है। रूप-आयतन, शब्द-आयतन, गंध-आयतन, रस-आयतन और स्प्रष्टव्य-आयतन मनोधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अस्ति-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

जिस रूप के आश्रय से मनोधातु और मनोविज्ञानधातु स्थित होते हैं, वह रूप मनोधातु और मनोविज्ञानधातु और उनसे संयुक्त धर्मों के साथ अस्ति-प्रत्यय से संबद्ध होता है।

नत्थिपच्चयोति – समनन्तरनिरुद्धा चित्तचेतसिका धम्मा पच्चुप्पन्नानं चित्तचेतसिकानं धम्मानं नत्थिपच्चयेन पच्चयो।

नास्ति-प्रत्यय – तत्काल निरुद्ध हुए चित्त चैतसिक धर्म प्रत्युत्पन्न चित्त चैतसिक धर्मों के साथ नास्ति-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

विगतपच्चयोति – समनन्तरविगता चित्तचेतसिका धम्मा पच्चुप्पन्नानं चित्तचेतसिकानं धम्मानं विगतपच्चयेन पच्चयो।

विगत-प्रत्यय – तत्काल विलुप्त हुए चित्त चैतसिक धर्म प्रत्युत्पन्न चित्त चैतसिक धर्मों के साथ विगत-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

अविगतपच्चयोति – चत्तारो खन्धा अरूपिनो अञ्ञमञ्ञं अविगतपच्चयेन पच्चयो। चत्तारो महाभूता अञ्ञमञ्ञं अविगतपच्चयेन पच्चयो। ओक्कन्तिक्खणे नामरूपं अञ्ञमञ्ञं अविगतपच्चयेन पच्चयो। चित्तचेतसिका धम्मा चित्तसमुट्ठानानं रूपानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। महाभूता उपादारूपानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। चक्खायतनं चक्खुविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। सोतायतनं सोतविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। घानायतनं घानविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। जिव्हायतनं जिव्हाविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। कायायतनं कायविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो।

रूपायतनं चक्खुविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। सद्दायतनं सोतविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। गन्धायतनं घानविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। रसायतनं जिव्हाविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। फोट्ठब्बायतनं कायविञ्ञाणधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो। रूपायतनं सद्दायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं मनोधातुया तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो।

यं रूपं निस्साय मनोधातु च मनोविञ्ञाणधातु च वत्तन्ति, तं रूपं मनोधातुया च मनोविञ्ञाणधातुया च तंसम्पयुत्तकानं च धम्मानं अविगतपच्चयेन पच्चयो ति।

अविगत-प्रत्यय – चारों अरूपी स्कंध एक दूसरे के साथ अविगत-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। चारों महाभूत एक दूसरे के साथ अविगत-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। प्रतिसंधि के क्षण में नाम और रूप एक दूसरे के साथ अविगत-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। चित्त चैतसिक धर्म चित्त से उत्पन्न होने वाले रूपों के साथ अविगत-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं। महाभूत उद्भूत रूपों के साथ अविगत-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

चक्षु-आयतन चक्षुविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत-प्रत्यय से संबद्ध होता है। श्रोत्र-आयतन श्रोत्रविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत-प्रत्यय से संबद्ध होता है। घ्राण-आयतन घ्राणविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत-प्रत्यय से संबद्ध होता है। जिव्हा-आयतन जिव्हाविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत-प्रत्यय से संबद्ध होता है। काय-आयतन कायविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत-प्रत्यय से संबद्ध होता है।

रूप-आयतन चक्षुविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत-प्रत्यय से संबद्ध होता है। शब्द-आयतन श्रोत्रविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत-प्रत्यय से संबद्ध होता है। गंध-आयतन घ्राणविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत-प्रत्यय से संबद्ध होता है। रस-आयतन जिव्हाविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत-प्रत्यय से संबद्ध होता है। स्प्रष्टव्य-आयतन कायविज्ञानधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत-प्रत्यय से संबद्ध होता है। रूप-आयतन, शब्द-आयतन, गंध-आयतन, रस-आयतन और स्प्रष्टव्य-आयतन मनोधातु और उससे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत-प्रत्यय से संबद्ध होते हैं।

जिस रूप के आश्रय से मनोधातु और मनोविज्ञानधातु स्थित होते हैं, वह रूप मनोधातु और मनोविज्ञानधातु और उनसे संयुक्त धर्मों के साथ अविगत-प्रत्यय से संबद्ध होता है।

[नोट - यह शाब्दिक अर्थ हैं। इनकी समीक्षा के लिए पूज्य श्री सत्यनारायण गोयन्काजी, विपश्यनाचार्य की 'तिकपट्ठान' शीर्षक वाली आडियो टेप को सुनना चाहिए जो हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में सुलभ है।]

यानीध भूतानि समागतानि,
भुम्मानि वा यानि'व अन्तलिक्खे।
तथागतं देवमनुस्सपूजितं,
बुद्धं नमस्साम सुवत्थि होतु।

इस समय धरती या आकाशमें रहने वाले जो भी प्राणी यहां उपस्थित हैं, हम सभी समस्त देवों और मनुष्यों द्वारा पूजित तथागत बुद्ध को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो।

धम्मं नमस्साम सुवत्थि होतु।

हम धर्म को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

सङ्घं नमस्साम सुवत्थि होतु॥

हम संघ को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

नमन करूं गुरुदेव को, सविनय शीश नवाय।
धरम रतन ऐसा दिया, पाप निकट नहीं आय॥

ऐसा चखाया धरम रस, बिसयन रस न लुभाय।
धरम सार ऐसा दिया, छिलके दिये छुड़ाय॥

रोम रोम किरतग हुआ, ऋण न चुकाया जाय।
जीऊं जीवन धरम का, दुखियन की सेवा करूं,
यही उचित उपाय॥

इस सेवा के पुण्य से, धरम उजागर होय।
कटे अंधेरा पाप का, जन मन हरखित होय,
सबका मंगल होय॥

भवतु सब्ब मङ्गलं। भवतु सब्ब मङ्गलं। भवतु सब्ब मङ्गलं॥

सबका मंगल, सबका मंगल, सबका मंगल होय रे।
तेरा मंगल, तेरा मंगल, तेरा मंगल होय रे॥

शुद्ध धरम धरती पर जागे, शुद्ध धरम धरती पर जागे,
पाप पराजित होय रे, पाप तिरोहित होय रे॥

जन मन के दुखड़े मिट जायें, जन मन के दुखड़े मिट जायें,
जन जन मंगल होय रे।

सबका मंगल, सबका मंगल, सबका मंगल होय रे,
तेरा मंगल, तेरा मंगल, तेरा मंगल होय रे।
जन जन मंगल, जन जन मंगल, जन जन सुखिया होय रे।

दिवस ६

जागो लोगो जगत के, बीती काली रात।
हुआ उजाला धरम का, मंगल हुआ प्रभात॥

आओ प्राणी विश्व के, सुनो धरम का ज्ञान।
इसमें सुख है शांति है, इसमें है निरवाण॥

यह तो वाणी बुद्ध की, शुद्ध धरम की ज्योत।
अक्षर अक्षर में भरा, मंगल ओत परोत॥

बुध वाणी मीठी घणी, मिसरी के से बोल।
कल्याणी मंगलमयी, भरा अमृत रस घोल॥

ଔଔଔ

समन्ता चक्कवाळेसु०।
धम्मस्सवणकालो०।
नमो तस्स भगवतो०।
बुद्धं सरणं गच्छामि।
इमाय धम्मानुधम्मपटिपत्तिया०।
ये च बुद्धा अतीता च०।
नत्थि मे सरणं अञ्ञं०।
इतिपि सो भगवा०।

☆☆☆

अविज्जापच्चया सङ्खारा, सङ्खारपच्चया विञ्ञाणं, विञ्ञाणपच्चया नामरूपं, नामरूपपच्चया सळायतनं, सळायतनपच्चया फस्सो, फस्सपच्चया वेदना, वेदनापच्चया तण्हा, तण्हापच्चया उपादानं, उपादानपच्चया भवो, भवपच्चया जाति, जातिपच्चया जरा-मरणं, सोक-परिदेव-दुक्ख-दोमनस्सुपायासा सम्भवन्ति। एवमेतस्स केवलस्स दुक्खक्खन्धस्स समुदयो होती ति।

अविद्या के प्रत्यय (कारण) से संस्कार, संस्कार के प्रत्यय से विज्ञान, विज्ञान के प्रत्यय से नाम-रूप, नाम-रूप के प्रत्यय से छः-आयतन, छः-आयतनों के प्रत्यय से स्पर्श, स्पर्श के प्रत्यय से वेदना, वेदना के प्रत्यय से तृष्णा, तृष्णा के प्रत्यय से उपादान, उपादान के प्रत्यय से भव, भव के प्रत्यय से जाति (जन्म), जाति के प्रत्यय से बुढ़ापा, मरना, शोक करना, रोना, पीटना, दुःखित, बेचैन और परेशान होना होता है। इस प्रकार सारे के सारे दुःख-समुदाय का उदय होता है।

अविज्जायत्वेव असेस-विराग-निरोधा सङ्खारनिरोधो, सङ्खारनिरोधा विञ्ञाणनिरोधो, विञ्ञाणनिरोधा नाम-रूपनिरोधो, नाम-रूपनिरोधा सळायतननिरोधो, सळायतननिरोधा फस्सनिरोधो, फस्सनिरोधा वेदनानिरोधो, वेदनानिरोधा तण्हानिरोधो, तण्हानिरोधा उपादाननिरोधो, उपादाननिरोधा भवनिरोधो, भवनिरोधा जातिनिरोधो, जातिनिरोधा जरा-मरणं, सोक-परिदेव-दुक्ख-दोमनस्सुपायासा निरुज्झन्ति। एवमेतस्स केवलस्स दुक्खक्खन्धस्स निरोधो होती ति।

अविद्या के संपूर्णतया निरुद्ध हो जाने से संस्कार का निरोध हो जाता है; संस्कार के निरुद्ध हो जाने से विज्ञान का निरोध हो जाता है; विज्ञान के निरुद्ध हो जाने से नाम-रूप का निरोध हो जाता है, नाम-रूप के निरुद्ध हो जाने से छह आयतनों का निरोध हो जाता है; छह आयतनों के निरुद्ध हो जाने से स्पर्श का निरोध हो जाता है; स्पर्श के निरुद्ध हो जाने से वेदना का निरोध हो जाता है; वेदना के निरुद्ध हो जाने से तृष्णा का निरोध हो जाता है; तृष्णा के निरुद्ध हो जाने से उपादान का निरोध हो जाता है; उपादान के निरुद्ध हो जाने से भव का निरोध हो जाता है; भव के निरुद्ध हो जाने से जन्म का निरोध हो जाता है; जन्म के निरुद्ध हो जाने से बुढ़ापा होना, मरना, शोक करना, रोना, पीटना, दुःखित होना, बेचैन और परेशान होना निरुद्ध हो जाते हैं। इस प्रकार सारे के सारे दुःख-समुदाय का निरोध हो जाता है।

☆☆☆

यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा, आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स।
अथस्स कङ्खा वपयन्ति सब्बा, यतो पजानाति सहेतु धम्मं॥

जब किसी तपस्वी और ध्यानी सत्पुरुष (श्रमण) ब्राह्मण को, सचमुच (बोधि-पक्षीय) धर्म उत्पन्न होते हैं, तब वह प्रत्ययों सहित धर्म को जान लेता है और इस कारण उसके समस्त शंका-संदेह दूर हो जाते हैं;

अथस्स कङ्खा वपयन्ति सब्बा, यतो खयं पच्चयानं अवेदी॥

तब वह प्रत्ययों के निरोध-क्षय होने को जान लेता है और इस कारण उसके समस्त शंका-संदेह दूर हो जाते हैं;

विधूपयं तिट्ठति मारसेनं, सुरियो व ओभासयमन्तलिक्खं ति॥

तब वह मार-सेना का विध्वंस कर वैसे ही स्थित होता है जैसे कि अंधकार को विध्वंस कर अंतरिक्ष में सूर्य प्रकाशमान होता है।

अनेक जाति संसारं, सन्धाविस्सं अनिब्बिसं।
गहकारं गवेसन्तो, दुक्खा जाति पुनप्पुनं॥

अनेक जन्मों तक बिना रुके संसार में दौड़ता रहा। (इस काया-रूपी) घर बनाने वाले की खोज करते हुए पुनः पुनः दुःखमय जन्म में पड़ता रहा।

गहकारक दिट्ठोसि, पुन गेहं न काहसि।
सब्बा ते फासुका भग्गा, गहकूटं विसङ्खितं।
विसङ्खारगतं चित्तं, तण्हानं खयमज्झगा।

हे गृहकारक !अब तू देख लिया गया है! अब तू पुनः घर नहीं बना सकेगा!तेरी सारी कड़ियां भग्न हो गयी हैं। घर का शिखर भी विशृंखलित हो गया है। चित्त संस्कार-रहित हो गया है, तृष्णा का समूल नाश हो गया है।

जयो हि बुद्धस्स सिरीमतो अयं, मारस्स च पापिमतो पराजयो। उग्घोसयुं बोधिमण्डे पमोदिता, जयं तदा नागगणा महेसिनो, जयं तदा सुपण्णगणा महेसिनो, जयं तदा देवगणा महेसिनो, जयं तदा ब्रह्मगणा महेसिनो॥

(जब महर्षि भगवान बुद्ध मार से संग्राम कर विजयी हुए तब) बोधिमंड पर प्रमुदित नागों, गरुडों, देवताओं तथा ब्रह्माओं ने महर्षि की जय की उद्घोषणा की- 'श्रीसम्पन्न (महानुभाव) बुद्ध की विजय हो गयी है, पापी मार की पराजय हो गयी है।'

यानीध भूतानि समागतानि,
भुम्मानि वा यानि'व अन्तलिक्खे।
तथागतं देवमनुस्सपूजितं,
बुद्धं नमस्साम सुवत्थि होतु।

धरती या आकाश में रहने वाले जो भी प्राणी यहां उपस्थित हैं, हम सभी समस्त देवों और मनुष्यों द्वारा पूजित तथागत बुद्ध को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

धम्मं नमस्साम सुवत्थि होतु।

हम धर्म को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

सङ्घं नमस्साम सुवत्थि होतु॥

हम संघ को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

नमन करूं गुरुदेव को, चरणन शीश नवाय।
धरम रतन ऐसा दिया, पाप पनप नहीं पाय॥

ऐसा चखाया धरम रस, बिसयन रस न लुभाय।
धरम सार ऐसा दिया, छिलके दिये छुड़ाय॥

रोम रोम किरतग हुआ, ऋण न चुकाया जाय।
जीऊं जीवन धरम का, दुखियन की सेवा करूं,
यही उचित उपाय॥

इस सेवा के पुण्य से, धरम उजागर होय।
कटे अंधेरा पाप का, जन जन हित सुख होय,
जन जन हित-सुख होय, जन जन मंगल होय॥

भवतु सब्ब मङ्गलं! भवतु सब्ब मङ्गलं! भवतु सब्ब मङ्गलं!

❀❀❀

सबका मंगल, सबका मंगल, सबका मंगल होय रे।
तेरा मंगल, तेरा मंगल, तेरा मंगल होय रे॥

इस धरती के तरु-तृण में, कण-कण में धरम समा जाय।
इस धरती के तरु-तृण में, कण-कण में धरम समा जाय।

जो भी तपे इस तपोभूमि पर, जो भी तपे इस तपोभूमि पर,
मुक्त दुःखों से हो जाय, मुक्त दुःखों से हो जाय॥

सबका मंगल, सबका मंगल, सबका मंगल होय रे।
तेरा मंगल, तेरा मंगल, तेरा मंगल होय रे।
जन जन मंगल, जन जन मंगल, जन जन सुखिया होय रे॥

दिवस ७

जागो लोगो जगत के, बीती काली रात।
हुआ उजाला धरम का, मंगल हुआ प्रभात॥

आओ प्राणी विश्व के, सुनो धरम का ज्ञान।
इसमें सुख है शांति है, मुक्ति मोक्ष निरवाण॥

यह तो वाणी बुद्ध की, शुद्ध धरम की ज्योत।
अक्षर अक्षर में भरा, मंगल ओत परोत॥

बुध वाणी मीठी घणी, मिसरी के से बोल।
कल्याणी मंगलमयी, भरा अमृत रस घोल॥

समन्ता चक्कवाळेसु०।
धम्मस्सवणकालो०।
नमो तस्स भगवतो०।
बुद्धं सरणं गच्छामि।
इमाय धम्मानुधम्मपटिपत्तिया०।
ये च बुद्धा अतीता च०।
नत्थि मे सरणं अञ्ञं०।
इतिपि सो भगवा०।

⭑⭑⭑

संसारे संसरन्तानं, सब्बदुक्खविनासके।
सत्तधम्मे च बोज्झङ्गे, मारसेनपमद्दने॥

बुज्झित्वा येचिमे सत्ता, तिभवा मुत्तकुत्तमा।
अजातिमजरा ब्याधिं, अमतं निब्भयं गता॥

(भव) संसार में संसरण करनेवाले प्राणियों के सब दु:खों का विनाश करनेवाले और मार की सेना का मर्दन करनेवाले, इन सात बोध्यंगों को जिन श्रेष्ठ प्राणियों ने (स्वयं अनुभव से) जान कर, इसी बीच तीनों लोकों से मुक्त हो, जन्म बुढ़ापा और रोग से रहित हो निर्भय अमृत (निर्वाण) की प्राप्ति कर ली है।

एवमादि गुणूपेतं, अनेकगुणसङ्गहं।
ओसधञ्च इमं मन्तं, बोज्झङ्गञ्च भणामहे,
ओसधञ्च इमं मन्तं, बोज्झङ्गञ्च भणामहे॥

ऐसे गुणों से युक्त अनेक गुणों के संग्रह-स्वरूप औषधि-सदृश इस बोध्यंग सुत्त मंत्र को कह रहे हैं:-

बोज्झङ्गो सति-सङ्खातो, धम्मानं-विचयो तथा।
वीरियं पीति पस्सद्धि, बोज्झङ्गा च तथा परे॥

समाधुपेक्खा बोज्झङ्गा, सत्तेते सब्बदस्सिना।
मुनिना सम्मदक्खाता, भाविता बहुलीकता॥

बोधि का अंग कहलाने वाले ये सात बोध्यंग हैं -

स्मृति, धर्म-विचय, वीर्य, प्रीति तथा प्रश्रब्धि, समाधि और उपेक्षा; जिन्हें सर्वदर्शी मुनि (भगवान बुद्ध) ने स्वयं भावित तथा बहुलीकृत किया और भली प्रकार बतलाया।

संवत्तन्ति अभिञ्ञाय, निब्बाणाय च बोधिया।
एतेन सच्चवज्जेन, सोत्थि ते होतु सब्बदा,
एतेन सच्चवज्जेन, सोत्थि ते होतु सब्बदा॥

वे अभिज्ञा, निर्वाण और बोधि को प्राप्त करानेवाले हैं। इस सत्य-वचन से सदा तेरा कल्याण हो! इस सत्य-वचन से सदा तेरा कल्याण हो!!

एकस्मिं समये नाथो, मोग्गलानञ्च कस्सपं।
गिलाने दुक्खिते दिस्वा, बोज्झङ्गे सत्त देसयी॥

भगवान बुद्ध ने एक समय मौद्गल्यायन और काश्यप को रोगी और दुःखी देखकर सात बोध्यंगों का उपदेश दिया था।

ते च तं अभिनन्दित्वा, रोगा मुच्चिंसु तङ्खणे।
एतेन सच्चवज्जेन, सोत्थि ते होतु सब्बदा,
एतेन सच्चवज्जेन, सोत्थि ते होतु सब्बदा॥

वे उनका अभिनंदन कर उसी क्षण रोग से मुक्त हो गये। इस सत्य वचन से सदा तेरा कल्याण हो!

एकदा धम्मराजापि, गेलञ्ञेनाभिपीलितो।
चुन्दत्थेरेन तं येव, भणापेत्वान सादरं॥

सम्मोदित्वान आबाधा, तम्हा वुट्ठासि ठानसो।
एतेन सच्चवज्जेन, सोत्थि ते होतु सब्बदा।
एतेन सच्चवज्जेन, सोत्थि ते होतु सब्बदा॥

एक समय धर्मराजा (बुद्ध) भी रोग से पीड़ित हो, चुन्द स्थविर से उसे ही आदरपूर्वक कहला कर, आनंदित होकर उस रोग से एकदम उठ खड़े हुए थे। इस सत्य वचन से सदा तेरा कल्याण हो!

पहीना ते च आबाधा, तिण्णन्नम्पि महेसिनं।
मग्गाहता किलेसा'व, पत्तानुपत्तिधम्मतं।
एतेन सच्चवज्जेन, सोत्थि ते होतु सब्बदा,
एतेन सच्चवज्जेन, सोत्थि ते होतु सब्बदा,
एतेन सच्चवज्जेन, सोत्थि ते होतु सब्बदा॥

तीनों ही महर्षियों के वे रोग दूर हो गये, लोकोत्तर मार्ग पर चलने से उनके क्लेश समाप्त हुये और उन क्लेशों ने पुनः न उत्पन्न होने की धर्मता पायी। इस सत्य वचन से तेरा सदा कल्याण हो!

⅄⅄⅄

यानीध भूतानि समागतानि,
भुम्मानि वा यानि'व अन्तलिक्खे।
तथागतं देवमनुस्सपूजितं,
बुद्धं नमस्साम सुवत्थि होतु।

धरती या आकाश में रहने वाले जो भी प्राणी यहां उपस्थित हैं, हम सभी समस्त देवों और मनुष्यों द्वारा पूजित तथागत बुद्ध को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

धम्मं नमस्साम सुवत्थि होतु।

हम धर्म को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

सङ्घं नमस्साम सुवत्थि होतु॥

हम संघ को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

ꕥꕥꕥ

नमन करूं गुरुदेव को, चरणन शीश नवाय।
धरम रतन ऐसा दिया, पाप निकट नहीं आय॥

ऐसा चखाया धरम रस, बिसयन रस न लुभाय।
धरम सार ऐसा दिया, छिलके दिये छुड़ाय॥

रोम-रोम किरतग हुआ, ऋण न चुकाया जाय।
जीऊं जीवन धरम का, दुखियन की सेवा करूं,
यही उचित उपाय॥

इस सेवा के पुण्य से, सुखी होंय सब लोग।
सबके मन जागे धरम, दूर होय भव रोग॥

दुखियारे दुःखमुक्त हों, भय त्यागें भयभीत।
वैर छोड़ कर लोग सब, करें परस्पर प्रीत॥

भवतु सब्ब मङ्गलं! भवतु सब्ब मङ्गलं!! भवतु सब्ब मङ्गलं!!!

❀❀❀

सबका मंगल, सबका मंगल, सबका मंगल होय रे।
तेरा मंगल, तेरा मंगल, तेरा मंगल होय रे॥

इस धरती के जितने प्राणी, तपोभूमि के जितने तापस,
मंगल से भरपूर हों, मंगल से भरपूर हों॥

राग द्वेष सबके मिट जायं, राग द्वेष सबके मिट जायं,
रोग शोक सब दूर हों, रोग शोक सब दूर हों॥

सबका मंगल, सबका मंगल, सबका मंगल होय रे।
तेरा मंगल, तेरा मंगल, तेरा मंगल होय रे।
जन जन मंगल, जन जन मंगल, जन जन मंगल होय रे॥

दिवस ८

जागो लोगो जगत के, बीती काली रात।
हुआ उजाला धरम का, मंगल हुआ प्रभात॥

आओ प्राणी विश्व के, चलें धरम के पंथ।
धरम पंथ ही शांति पथ, धरम पंथ सुखपंथ॥

आदि मांही कल्याण है, मध्य मांही कल्याण।
अंत मांही कल्याण है, कदम कदम कल्याण॥

शील मांही कल्याण है, है समाधि कल्याण।
प्रज्ञा तो कल्याण ही, प्रगटे पद निरवाण॥

कितने दिन भटकत फिरे, अंधी गलियन मांही।
अब तो पाया राजपथ, वापस मुड़ना नांही,
अब तो पाया विमल पथ, पीछे हटना नांही॥

समन्ता चक्कवाळेसु०।
धम्मस्सवणकालो०।
नमो तस्स भगवतो०।
बुद्धं सरणं गच्छामि।
इमाय धम्मानुधम्मपटिपत्तिया०।
ये च बुद्धा अतीता च०।
नत्थि मे सरणं अञ्ञं०।
इतिपि सो भगवा०।

☆☆☆

पूरेन्तो बोधिसम्भारे, नाथो तेमिय जातियं।
मेत्तानिसंसं यं आह, सुनन्दं नाम सारथिं।
सब्बलोकहितत्थाय, परित्तं तं भणामहे॥

बोधि के लिए पारमिताओं को पूर्ण करते हुए (बोधिसत्त्व) नाथ ने तेमिय के रूप में जन्म लेकर सुनंद नामक सारथि को मैत्री की महानता का आख्यान किया, उस परित्राण को सारे लोक के हित के लिए कह रहे हैं: –

पहूतभक्खो भवति, विप्पवुत्थो सका घरा।
बहूनं उपजीवन्ति, यो मित्तानं न दूभति॥

जो मित्रों को धोखा नहीं देता: वह अपने घर से बाहर (प्रवास में जाने पर) खाद्य-भोग का भागी होता है, उसके सहारे अनेकों की जीविका चलती है।

यं यं जनपदं याति, निगमे राजधानियो।
सब्बत्थ पूजितो होति, यो मित्तानं न दूभति॥

जो मित्रों को धोखा नहीं देता: वह जिस-जिस जनपद, कस्बे और राजधानी में जाता है, सर्वत्र पूजित होता है।

नास्स चोरा पसहन्ति, नातिमञ्ञेति खत्तियो।
सब्बे अमित्ते तरति, यो मित्तानं न दूभति॥

जो मित्रों को धोखा नहीं देता: उसे चोर परेशान नहीं करते, राजा उसका अनादर नहीं करता, वह सभी शत्रुओं पर विजय पा लेता है।

अकुद्धो सघरं एति, सभायं पटिनन्दितो।
ञातीनं उत्तमो होति, यो मित्तानं न दूभति॥

जो मित्रों को धोखा नहीं देता: वह प्रसन्नचित्त से अपने घर लौटता है, सभा में उसका स्वागत होता है, जाति-बिरादरी में वह उत्तम माना जाता है।

सक्कत्वा सक्कतो होति, गरू होति सगारवो।
वण्णकित्तिभतो होति, यो मित्तानं न दूभति॥

जो मित्रों को धोखा नहीं देता: वह सत्कार करके सत्कार पाता है, गौरव करके गौरवशाली होता है, वह प्रशंसा और कीर्ति का भोगी होता है।

पूजको लभते पूजं, वन्दको पटिवन्दनं।
यसो कित्तिञ्च पप्पोति, यो मित्तानं न दूभति॥

जो मित्रों को धोखा नहीं देता: उस पूजा करनेवाले की पूजा होती है, वंदना करनेवाले की वंदना होती है, वह यश और कीर्ति को प्राप्त होता है।

अग्गि यथा पज्जलति, देवताव विरोचति।
सिरिया अजहितो होति, यो मित्तानं न दूभति॥

जो मित्रों को धोखा नहीं देता: वह आग के समान प्रज्वलित होता है, देवता के समान प्रकाशमान होता है, श्री-युक्त होता है।

गावो तस्स पजायन्ति, खेत्ते वुत्तं विरूहति।
वुत्तानं फलमस्नाति, यो मित्तानं न दूभति॥

जो मित्रों को धोखा नहीं देता: उसकी गायें प्रजनन करती हैं, खेत में बोया बढ़ता है, और जो बोता है उसका वह फल खाता है।

दरितो पब्बततो वा, रुक्खतो पतितो नरो।
चुतो पतिट्ठं लभति, यो मित्तानं न दूभति॥

जो मित्रों को धोखा नहीं देता: दर्रे, पर्वत अथवा वृक्ष से गिरा हुआ वह व्यक्ति, गिर कर भी सहारा पा लेता है।

विरूल्हमूलसन्तानं, निग्रोधमिव मालुतो।
अमित्ता नप्पसहन्ति, यो मित्तानं न दूभति,
यो मित्तानं न दूभति॥

जो मित्रों को धोखा नहीं देता: उसे शत्रु पराजित नहीं कर सकते, वैसे ही जैसे कि मजबूत जड़ वाले बरगद के वृक्ष का हवा (आंधी) कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती।

यानीध भूतानि समागतानि,
भुम्मानि वा यानि'व अन्तलिक्खे,
तथागतं देवमनुस्सपूजितं,
बुद्धं नमस्साम सुवत्थि होतु।

धरती या आकाश में रहने वाले जो भी प्राणी यहां उपस्थित हैं, हम सभी समस्त देवों और मनुष्यों द्वारा पूजित तथागत बुद्ध को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

धम्मं नमस्साम सुवत्थि होतु।

हम धर्म को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

सङ्घं नमस्साम सुवत्थि होतु॥

हम संघ को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

नमन करूं गुरुदेव का, सादर शीश नवाय।
धरम रतन ऐसा दिया, पाप उपज नहीं पाय॥

ऐसा चखाया धरम रस, बिसयन रस न लुभाय।
धरम सार ऐसा दिया, छिलके दिये छुड़ाय॥

रोम रोम कि रतग हुआ, ऋण न चुकाया जाय।
जीऊं जीवन धरम का, दुखियन की सेवा करूं,
यही उचित उपाय॥

इस सेवा के पुण्य से, धरम उजागर होय।
कटे अंधेरा पाप का, जन मन हरखित होय॥

बरसे बरखा समय पर, दूर रहे दुष्काल।
शासन होवे धरम का, शासन होवे धरम का,
शासन होवे धरम का, लोग होंय खुशहाल॥

सुख व्यापे इस जगत में, दुखिया रहे न कोय,
सबके मन जागे धरम, सबका मंगल होय,
सबका मंगल होय॥

भवतु सब्ब मङ्गलं! भवतु सब्ब मङ्गलं! भवतु सब्ब मङ्गलं!!

❀❀❀

सबका मंगल, सबका मंगल, सबका मंगल होय रे।
तेरा मंगल, तेरा मंगल, तेरा मंगल होय रे॥

इस धरती के तरु-तृण में, कण-कणमें धरम समा जाय;
इस धरती के तरु-तृण में, कण-कणमें धरम समा जाय।

जो भी तपे इस तपोभूमि पर, जो भी तपे इस तपोभूमि पर,
मुक्त दुःखों से हो जाय, मुक्त दुःखों से हो जाय॥

सबका मंगल, सबका मंगल, सबका मंगल होय रे।
तेरा मंगल, तेरा मंगल, तेरा मंगल होय रे।
जन जन मंगल, जन जन मंगल, जन जन सुखिया होय रे॥

दिवस ९

जागो लोगो जगत के, बीती काली रात।
हुआ उजाला धरम का, मंगल हुआ प्रभात॥

आओ प्राणी विश्व के, चलें धरम के पंथ।
धरम पंथ ही शांति पथ, धरम पंथ सुख पंथ॥

आदि मांही कल्याण है, मध्य मांही कल्याण।
अंत मांही कल्याण है, कदम कदम कल्याण॥

शील मांही कल्याण है, है समाधि कल्याण।
प्रज्ञा तो कल्याण ही, प्रगटे पद निरवाण॥

कितने दिन भटकत फिरे, अंधी गलियन मांही।
अब तो पाया राजपथ, वापिस मुड़ना नाहीं॥
अब तो पाया विमल पथ, पीछे हटना नाहीं॥

समन्ता चक्कवाळेसु०।
धम्मस्सवणकालो०।
नमो तस्स भगवतो०।
बुद्धं सरणं गच्छामि।
इमाय धम्मानुधम्मपटिपत्तिया०।
ये च बुद्धा अतीता च०।
नत्थि मे सरणं अञ्ञं०।
इतिपि सो भगवा०।

★★★

असेवना च बालानं,
पण्डितानं च सेवना।
पूजा च पूजनीयानं,
एतं मङ्गलमुत्तमं॥

मूर्खों की संगति न करना, पंडितों (ज्ञानियों) की संगति करना और पूजनीयों की पूजा करना – यह उत्तम मंगल है।

पतिरूपदेसवासो च,
पुब्बे च कतपुञ्ञता।
अत्त-सम्मापणिधि च,
एतं मङ्गलमुत्तमं॥

उपयुक्त स्थान में निवास करना, पूर्व जन्मों का संचित-पुण्य वाला होना और अपने आप को सम्यक रूप से समाहित रखना – यह उत्तम मंगल है।

बाहुसच्चञ्च सिप्पञ्च,
विनयो च सुसिक्खितो।
सुभासिता च या वाचा,
एतं मङ्गलमुत्तमं॥

अनेक विद्याओं को अर्जित करना, शिल्प-कलाओं को सीखना, विनीत होना, सुशिक्षित होना और (वार्तालाप में) सुभाषी होना – यह उत्तम मंगल है।

माता-पितु-उपट्ठानं,
पुत्तदारस्स सङ्गहो।
अनाकु ला च क म्मन्ता,
एतं मङ्गलमुत्तमं॥

माता-पिता की सेवा क रना, पुत्र-स्त्री (परिवार) का पालन-पोषण क रना और आकु ल-उद्विग्न न क रने वाला (निष्पाप) व्यवसाय क रना – यह उत्तम मंगल है।

दानञ्च धम्मचरिया च,
ञातक ानञ्च सङ्गहो।
अनवज्जानि क म्मानि,
एतं मङ्गलमुत्तमं॥

दान देना, धर्म का आचरण क रना, बंधु-बांधवों की सहायता क रना और अनवर्जित क र्म ही क रना –यह उत्तम मंगल है।

आरती विरती पापा,
मज्जपाना च संयमो।
अप्पमादो च धम्मेसु,
एतं मङ्गलमुत्तमं॥

तन-मन से पापों का त्याग क रना, मदिरा-सेवन से दूर रहना और कु शल धर्मों के पालन में सदा सचेत रहना –यह उत्तम मंगल है।

गारवो च निवातो च,
सन्तुट्ठि च क तञ्ञुता।
क ालेन धम्मस्सवनं,
एतं मङ्गलमुत्तमं॥

(पूजनीय व्यक्तियों को) गौरव देना, सदा विनीत रहना, संतुष्ट रहना, दूसरों द्वारा कि ये गये उपक ार को स्वीक ार क रना और उचित समय पर धर्म-श्रवण क रना – यह उत्तम मंगल है।

खन्ती च सोवचस्सता,
समणानञ्च दस्सनं।
क ालेन धम्मसाक च्छा,
एतं मङ्गलमुत्तमं॥

क्षमाशील होना, आज्ञाक ारी होना, श्रमणों का दर्शन क रना और उचित समय पर धर्म-चर्चा क रना –यह उत्तम मंगल है।

तपो च ब्रह्मचरियञ्च,
अरियसच्चान-दस्सनं।
निब्बानसच्छिकि रिया च,
एतं मङ्गलमुत्तमं॥

तप, ब्रह्मचर्य का पालन करना, आर्य-सत्यों का दर्शन करना और निर्वाण का साक्षात्कार करना – यह उत्तम मंगल है।

फु ट्ठस्स लोक धम्मेहि,
चित्तं यस्स न क म्पति।
असोकं विरजं खेमं,
एतं मङ्गलमुत्तमं॥

(लाभ-हानि, यश-अपयश, निंदा-प्रशंसा और सुख-दुःख इन) लोक-धर्मों के स्पर्श से जिसका चित्त कं पित नहीं होता, निःशोक , निर्मल और निर्भय रहता है – यह उत्तम मंगल है।

एतादिसानि कत्वान,
सब्बत्थमपराजिता।
सब्बत्थसोत्थिं गच्छन्ति,
तं तेसं मङ्गलमुत्तमं।
तं तेसं मङ्गलमुत्तमं॥

इस प्रकार के कार्य कर के (ये लोग) सर्वत्र अपराजित हो, सर्वत्र कल्याण-लाभी होते हैं। उन मंगल करने वालों के यही उत्तम मंगल हैं।

यानीध भूतानि समागतानि,
भुम्मानि वा यानि'व अन्तलिक्खे।
तथागतं देवमनुस्सपूजितं,
बुद्धं नमस्साम सुवत्थि होतु।

धरती या आकाश में रहने वाले जो भी प्राणी यहां उपस्थित हैं, हम सभी समस्त देवों और मनुष्यों द्वारा पूजित तथागत बुद्ध को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

धम्मं नमस्साम सुवत्थि होतु।

हम धर्म को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

सङ्घं नमस्साम सुवत्थि होतु॥

हम संघ को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

नमन करूं गुरुदेव को, चरणन शीश नवाय।
धरम रतन ऐसा दिया, पाप उखड़ता जाय॥

ऐसा चखाया धरम रस, बिसयन रस न लुभाय।
धरम सार ऐसा दिया, छिलके दिये छुड़ाय॥

रोम रोम कि रतग हुआ, ऋण न चुकाया जाय।
जीऊं जीवन धरम का, दुखियन की सेवा करूं,
यही उचित उपाय॥

इस सेवा के पुण्य से, भला सभी का होय।
सबके मन जागे धरम, मुक्ति दुःखों से होय॥

धरमविहारी पुरुष हों, धरमचारिणी नार।
धरमवंत संतान हो, सुखी रहे परिवार,
सुखी रहे संसार॥

भवतु सब्ब मङ्गलं! भवतु सब्ब मङ्गलं! भवतु सब्ब मङ्गलं!!

❀❀❀

सबका मंगल, सबका मंगल, सबका मंगल होय रे।
तेरा मंगल, तेरा मंगल, तेरा मंगल होय रे॥

शुद्ध धरम घर घर में जागे, शुद्ध धरम घर घर में जागे,
घर घर शांति समाय रे, घर घर शांति समाय रे।

नर नारी हों धरमविहारी, सब नर नारी धरमविहारी,
घर घर मंगल छाय रे, घर घर मंगल छाय रे।

सबका मंगल, सबका मंगल, सबका मंगल होय रे।
तेरा मंगल, तेरा मंगल, तेरा मंगल होय रे।
जन जन मंगल, जन जन मंगल, जन जन सुखिया होय रे॥

दिवस १०

जागो लोगो जगत के, बीती काली रात।
हुआ उजाला धरम का, मंगल हुआ प्रभात॥

आओ प्राणी विश्व के, सुनो धरम का ज्ञान।
इसमें सुख है शांति है, मुक्ति मोक्ष निरवाण॥

आओ प्राणी जगत के, चलें धरम के पंथ।
धरम पंथ ही शांति पथ, धरम पंथ सुख पंथ॥

आदि मांही कल्याण है, मध्य मांही कल्याण।
अंत मांही कल्याण है, कदम कदम कल्याण॥

शील मांही कल्याण है, है समाधि कल्याण।
प्रज्ञा तो कल्याण ही, धरम दियो भगवान॥

कितने दिन भटकत फिरे, अंधी गलियन मांही।
अब तो पाया राजपथ, वापस मुड़ना नांही।
अब तो पाया विमल पथ, पीछे हटना नांही॥

समन्ता चक्कवाळेसु०।
धम्मस्सवणकालो०।
नमो तस्स भगवतो०।
बुद्धं सरणं गच्छामि।
इमाय धम्मानुधम्मपटिपत्तिया०।
ये च बुद्धा अतीता च०।
नत्थि मे सरणं अञ्ञं०।
इतिपि सो भगवा०।

यानीध भूतानि समागतानि,
भुम्मानि वा यानि'व अन्तलिक्खे।
तथागतं देवमनुस्सपूजितं,
बुद्धं नमस्साम सुवत्थि होतु।

धरती या आकाश में रहने वाले जो भी प्राणी यहां उपस्थित हैं, हम सभी समस्त देवों और मनुष्यों द्वारा पूजित तथागत बुद्ध को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

धम्मं नमस्साम सुवत्थि होतु।

हम धर्म को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

सङ्घं नमस्साम सुवत्थि होतु॥

हम संघ को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो!

नमन करूं गुरुदेव को, चरणन शीश नवाय।
धरम रतन ऐसा दिया, पाप उपज नहीं पाय॥

ऐसा चखाया धरम रस, बिसयन रस न लुभाय।
धरम सार ऐसा दिया, छिलके दिये छुड़ाय॥

रोम रोम किरतग हुआ, ऋण न चुकाया जाय।
जीऊं जीवन धरम का, दुखियन की सेवा करूं,
यही उचित उपाय॥

इस दुखियारे जगत में, सुखिया दिखे न कोय।
शुद्ध धरम फिर से जगे, फिर से मंगल होय॥

दसों दिशाओं के सभी, प्राणी सुखिया होंय।
निरभय हों, निरवैर हों, सभी निरामय होंय,
सबका मंगल होय॥

☆☆☆

पुरत्थिमाय दिसाय, पुरत्थिमाय अनुदिसाय।
दक्खिणाय दिसाय, दक्खिणाय अनुदिसाय।
पच्छिमाय दिसाय, पच्छिमाय अनुदिसाय।
उत्तराय दिसाय, उत्तराय अनुदिसाय।
उपरिमाय दिसाय, हेट्ठिमाय दिसाय।
सब्बे सत्ता, सब्बे पाणा, सब्बे भूता,
सब्बे पुग्गला, सब्बे अत्तभावपरियापन्ना,
सब्बा इत्थियो, सब्बे पुरिसा,
सब्बे अरिया, सब्बे अनरिया,
सब्बे मनुस्सा, सब्बे अमनुस्सा, सब्बे देवा,
सब्बे विनिपातिका –
अवेरा होन्तु, अब्यापज्झा होन्तु,
अनीघा होन्तु, सुखी अत्तानं परिहरन्तु॥

पूर्व दिशा, पूर्व-दक्षिण दिशा,
दक्षिण दिशा, पश्चिमोत्तर दिशा,
पश्चिम दिशा, पश्चिम-दक्षिण दिशा,
उत्तर दिशा, पूर्वोत्तर दिशा,
ऊपर की दिशा, नीचे की दिशा, अर्थात
(दसों दिशाओं) के सभी सत्त्व, सभी प्राणी, सभी जीव, सभी पुद्गल,
जन्म ग्रहण किए सभी व्यक्ति, सभी स्त्रियां, सभी पुरुष, सभी आर्य,
सभी अनार्य, सभी देव, सभी मनुष्य, सभी
अमनुष्य, और सभी नरकगामी –
वैर-विहीन हों, ब्यापाद (द्वेष)-विहीन हों, क्रोध-विहीन हों, (और)
सुखपूर्वक अपना संरक्षण करें।

सब्बे सत्ता सुखी होन्तु, सब्बे होन्तु च खेमिनो।
सब्बे सत्ता सुखी होन्तु, सब्बे होन्तु च खेमिनो।

सब्बे भद्राणि पस्सन्तु, सब्बे भद्राणि पस्सन्तु,
मा किञ्चि पापमागमा, मा किञ्चि दुक्खमागमा॥

सभी प्राणी सुखी हों। सभी कुशल-क्षेम युक्त हों।
सभी प्राणी सुखी हों, सभी कुशल-क्षेम युक्त हों।

सभी शुभ देखें। सभी शुभ देखें।
कोई पाप का भागी न बने, किसी को भी कोई दुःख प्राप्त न हो॥

भवतु सब्ब मङ्गलं! भवतु सब्ब मङ्गलं! भवतु सब्ब मङ्गलं!!
सबका मंगल हो! सबका मंगल हो! सबका मंगल हो!

❀❀❀

फिर से जागे धरम जगत में, फिर से होवे जग कल्याण,
जागे जागे धरम जगत में, होवे होवे जन कल्याण।
फिर से जागे धरम जगत में, फिर से होवे जग कल्याण,
जागे जागे धरम जगत में, होवे होवे जन कल्याण।
राग द्वेष और मोह दूर हों, जागे शील समाधि ज्ञान,
राग द्वेष और मोह दूर हों, जागे शील समाधि ज्ञान।
जन मन के दुखड़े मिट जायें, फिर से जाग उठे मुसकान।
जन मन के दुखड़े मिट जायें, फिर से जाग उठे मुसकान।
फिर से जागे धरम जगत में, फिर से होवे जग कल्याण॥
जागे जागे धरम की वाणी, मंगल मूल महा कल्याणी।
मंगल मूल महा कल्याणी, जागे जागे धरम की वाणी।
जागे बुद्ध सदृश कोई ज्ञानी, होंय सुखी सब जग के प्राणी।
जागे बुद्ध सदृश कोई ज्ञानी, होंय सुखी सब जग के प्राणी।
जागे जागे धरम की वाणी, मंगल मूल महा
कल्याणी, मंगल मूल महा कल्याणी,
जागे जागे धरम कीवाणी, जागे बुद्ध सदृश कोईज्ञानी, होंय सुखी सब जग के प्राणी॥

❀❀❀